



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 244]

नई दिल्ली, बुध्स्पतिवार, अप्रैल 23, 2009/वैशाख 3, 1931

No. 244]

NEW DELHI, THURSDAY, APRIL 23, 2009/VAISAKHA 3, 1931

रक्षोपाय महानिदेशालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 अप्रैल, 2009

विषय : भारत में हॉट रोल्ड कॉयल्स/शीर्ष/स्ट्रिप्स के आयातों के संबंध में रक्षोपाय जांच

सा.का.नि. 281(अ).—यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं निर्धारण) नियम, 1997 को ध्यान में रखते हुए;

1. प्रक्रिया

- (i) मै. इस्पात इंडस्ट्रीज लि. तथा एस्सार स्टील लि. (जिन्हें आगे आवेदक कहा गया है) ने भारत में हॉट रोल्ड कॉयल्स/शीर्ष/स्ट्रिप्स के संवर्धित आयातों, जिनसे घरेलू उत्पादकों को गंभीर क्षति हुई है और उसका खतरा पैदा हुआ, का आरोप लगाते हुए यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा दिनांक 29-7-1997 की अधिसूचना सं. 35/97-एनटी-सी.शु. द्वारा अधिसूचित सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं निर्धारण) नियम, 1997 (जिन्हें आगे नियम कहा गया है) के अनुसार दिनांक 5 फरवरी, 2009 को महानिदेशक के समक्ष एक याचिका दायर की। इस याचिका का समर्थन जेएसडब्ल्यू स्टील्स लि. तथा भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड द्वारा किया गया है।
- (ii) आवेदन के प्रारंभिक जांच से कुछ कमियों का पता चला है जिन्हें आवेदकों ने सुधार दिया है। आवेदकों ने दिनांक 21 मार्च, 2009 को अद्यतित तथा विधिवत प्रलेखित आवेदन दायर किया।
- (iii) विधिवत सत्यापन के बाद यह देखा गया था कि संवर्धित आयातों, गंभीर क्षति अथवा गंभीर क्षति के खतरे एवं संवर्धित आयातों तथा आरोपित क्षति या गंभीर क्षति के खतरे के बीच कारणात्मक संबंध के बारे में पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य हैं जिससे जांच की शुरुआत न्यायोचित ठहरती है। तदनुसार, इस बात का निर्धारण करने के लिए कि क्या विचाराधीन उत्पाद के आयात में ऐसी परिस्थितियों में वृद्धि हुई है जिनमें रक्षोपाय शुल्क को लगाने को न्यायोचित ठहराने हेतु घरेलू उद्योग को क्षति या गंभीर क्षति का खतरा उत्पन्न हुआ है, जांच शुरू करने का निर्णय लिया गया था।
- (iv) भारत में हॉट रोल्ड कॉयल्स/शीर्ष/स्ट्रिप्स के आयातों के संबंध में रक्षोपाय जांच की शुरुआत की सूचना 9 अप्रैल, 2009 को जारी की गई थी जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था।
- (v) जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की एक प्रति नई दिल्ली स्थित दूतावासों के जरिए निर्यातक देशों की सरकारों को भेजी गई है।
- (vi) जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की एक प्रति समस्त ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को निम्नानुसार भेजी गई है :

घरेलू उत्पादक :-

- (क) इस्पात इंडस्ट्रीज लि., मुम्बई
- (ख) एस्सार स्टील्स लि., मुम्बई
- (ग) जेएसडब्ल्यू स्टील्स लि., मुम्बई
- (घ) भारतीय इस्पात प्राधिकरण लि., नई दिल्ली
- (ङ.) टाटा स्टील्स लि., मुम्बई

आयातक/उपभोक्ता

क) भूषण स्टील लि., नई दिल्ली	ड) समीर इंड. मेटल कार्पो., मुम्बई
ख) नेशनल स्टील एंड एग्री इंड. लि., इंदौर	ढ) राणे (मद्रास) लि., चेन्नई
ग) श्री प्रीकोटेड स्टील लि., मुम्बई	ण) रमेश स्टील सेल्स, मुम्बई
घ) उत्तम स्टील्स, मुम्बई	त) नेशनल ब्रास वर्क्स, मुम्बई
ङ.) यशपाल एंड कं., नई दिल्ली	थ) गुजरात ऑटोफिल्ट, अहमदाबाद
च) विशाल ट्यूब्स एंड पाइप्स प्रा. लि., मुम्बई	द) ब्रेक्स इंडिया लि., चेन्नई
छ) वीडी स्वामी एंड कं. लि., चेन्नई	ध) भारत टिन एंड एनामेल कं. प्रा. लि., कोलकाता
ज) यूनीमैक इंजीनियर्स, सतना	न) अब्दुल वाजीद एंड कं., मुराबाद
झ) टोएटा शुशो कार्पो., बंगलौर	प) मार्क ऑटो इंड लि., गुडगाँव
ट) द प्रीमियर ऑटोमोबाइल्स लि., मुम्बई	फ) किरण ओवरसीज, मुम्बई
ठ) सान्को कैमिकल्स प्रा. लि., मुम्बई	ब) केहर सर्जिकल एंड अलाइड प्रोडक्ट्स प्रा. लि., कानपुर

निर्गतक

बुहान आयरन एंड स्टील (ग्रुप) कार्पो., चीन	अनशान आयरन एंड स्टील ग्रुप कार्पो., चीन
बाओटु आयरन एंड स्टील (ग्रुप) कार्पो. लि., चीन	तेंगशान ग्रांड फेथ स्टील कं. लि., चीन
बीजिंग शोन्गांग कं. लि., चीन	एवरेजहोल्डिंग ग्रुप कं. लि., रूस
सेवरस्टाल, रूस	इंडस्ट्रियल यूनियन ऑफ दनबास, यूक्रेन
लिच, यूक्रेन	एससीएम, यूक्रेन
इरेजली आयरन एंड स्टील कं., तुर्की	पॉस्को, दक्षिण कोरिया
डांगबु ग्रुप, दक्षिण कोरिया	जी स्टील पीसीएल थाइलैंड
सहायिरिया स्टील इंड. पीसीएल थाइलैंड	एनएसएम स्टील थाइलैंड
पीटी क्राकटाउ स्टील, इंडोनेशिया	सउदी आयरन एंड स्टील कं., सदी अरब
हाइवेल्ड स्टील, दक्षिण अफ्रीका	मित्तल स्टील, दक्षिण अफ्रीका
इस्पात कारमेट, कजाकिस्तान	जेएफई स्टील कार्पो., जापान
निप्पन स्टील कार्पो., जापान	इस्फहान स्टील कं., ईरान
मुबारकेह स्टील कं., ईरान	मेगास्टील विजमालियन, मलेशिया
स्टीलकोर्प, फिलिपींस	मित्तल स्टील गलाती, रोमानिया
ब्लुस्कोप स्टील लि., ऑस्ट्रेलिया	वनस्टील लि., ऑस्ट्रेलिया
आस्कोन पीटीवाई लि., क्विन्सलैंड	डुफेको बेलजियम, बेलजियम

कॉकरिल सम्बरेसा, बेल्जियम	अलता स्टील लि., कनाडा
एसोसिएटेड ट्यूब, कनाडा	स्टील को/यूएस स्टील कनाडा
एरामेट, फ्रांस	यूजीटैक शा, फ्रांस
एरास्टील एसएस, फ्रांस	बैडिशे स्टॉलवर्क जीएमबीएच, जर्मनी
हुतेनवर्क क्रेप, जर्मनी	सार्सटाल एजी, जर्मनी
सेल्जजिटर एजी स्ताल उंड, जर्मनी	नेडस्टाल बी. वी., नीदरलैंड
नट स्टील होल्डिंग्स पीटीई लि., सिंगापुर	ओवाको होल्डिंग्स एबी, स्वीडन
टैंग इंग आयरन वर्क्स कं. लि.	यीह यूनाइटेड स्टील कार्पो., ताइवान
कोरस ग्रुप- यूके	कॉमर्शियल मेटल्स कं. लि., अमरीका
होआ फट स्टील पाइप कं. लि., वियतनाम	यूरो गल्फ स्टील इंड. एलएलसी, यूएई

ज्ञात व्यापार एसोसिएशन

ऑटोमोटीव कम्पोनेंट मैनुफैचरर एसोसिएशन ऑफ इंडिया, नई दिल्ली	कोल्ड रोल्ड स्टील मैनु. एसो. ऑफ इंडिया, नई दिल्ली
बिल्डर्स एसो. ऑफ इंडिया, मुंबई	ऑल इंडिया स्टील सि-रोलर्स एसो. नई दिल्ली

(vii) सभी ज्ञात घरेलू उत्पादकों, ज्ञात निर्यातकों और ज्ञात आयातकों/उपभोक्ताओं को भी प्रश्नावलियाँ भेजी गई हैं और उनसे 30 दिनों के भीतर अपना उत्तर प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था।

(viii) विदेशी उत्पादकों, भारतीय आयातकों/उपभोक्ताओं, भारतीय उत्पादकों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों से माँगी जा रही सूचना पर अंतिम जांच परिणाम हेतु विचार किया जाएगा।

2. घरेलू उद्योग के विचार

घरेलू उद्योग अर्थात् इस्पात इंड. लि., एस्सार स्टील्स लि. तथा समर्थकों मै. जे. एस. डब्ल्यू स्टील्स लि. और भारतीय इस्पात प्राधिकरण लि. ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं जिनका उत्पादन इस उत्पाद के घरेलू उत्पादन का 79% बनता है :

- (i) वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के सी.शु. उपशीर्ष सं. 7208 के अंतर्गत आने वाली हॉट रोल्ड कॉयल्स/शीर्ष/स्ट्रिप्स है।
- (ii) भारत में संबंधित उत्पाद का आयात जो वर्ष 2005-06 में 1.67 लाख मी. टन/माह का हुआ था वह वर्ष 2006-07 में लगभग उसी स्तर पर बना रहा। वर्ष 2007-08 में यह बढ़कर 2.30 लाख मी. टन/माह हो गया किंतु अप्रैल, 08-जून, 08 की तिमाही में घटकर 2.25 लाख मी. टन/माह हो गया तथा जुलाई, 08-सितंबर, 08 की तिमाही में घटकर आयात कीमत में वृद्धि के साथ 0.80 लाख मी. टन/माह हो गया। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि घरेलू कीमतें इस अवधि में आयात कीमतों से कम रही थीं। वर्तमान मंदी की शुरुआत होने से आयातों में तेजी से वृद्धि हुई और ये अक्टूबर-दिसंबर, 08 की तिमाही में बढ़कर 1.479 लाख मी. टन/माह हो गए जो जनवरी-फरवरी माह में बढ़कर 2.206 लाख मी. टन/माह हो गए।

(iii) अप्रत्याशित वैश्विक मंदी के कारण वैश्विक माँग में अवांछित गिरावट की वजह से आयातित सामग्री की कीमत में अक्टूबर, 08 से गिरावट शुरू हुई। यह कीमत अक्टूबर, 08 में 1000 अम. डा. पीएमटी से घटकर इस समय 4000 अम. डा. से कम चल रही है।

(iv) जिस सामग्री को अक्टूबर- नवंबर, 2008 में बुक किया गया था वह जनवरी-फरवरी, 2009 से भारतीय पत्तन पर पहुँचनी शुरू हो गई है। सामान्यतः आयातों की बुकिंग और भारत में खेप आने के बीच दो माह का समयान्तराल होता है।

(v) फरवरी, 2009 में ही मुंबई पत्तन पर 450 अम. डा./मी. टन की कीमत पर लगभग एक लाख मी. टन सामग्री पहुँच गई है।

(vi) कीमत में गिरावट अभूतपूर्व है जैसाकि निम्नलिखित से स्पष्ट हो जाता है :

वर्ष	कीमत अम.डा./मी. टन में
2005-06	738
2006-07	607
2007-08	781
अप्रैल- सित. 08	1070
अक्तू.-दिसंबर, 08	1054
जनवरी, 2009	858
फरवरी, 2009	648
इस समय	380

ऐसा देखा गया है कि आयात मूल्य 2007-08 में महत्वपूर्ण रूप से, अंशतः अधिक निवेश मूल्यों के कारण और अंशतः विश्वव्यापी आयात के मूल्यों में बढ़ोत्तरी के कारण बढ़ा है। परन्तु आर्थिक मंदी के कारण आयात के मूल्यों में तेजी से गिरावट दर्ज की गई है जैसा कि नीचे सारणी में देखा जा सकता है —

मूल्यों में गिरावट की यह प्रवृत्ति अभी भी नहीं थमी है —

जनवरी और फरवरी में जब आयात का औसत मूल्य क्रमशः 858 अम.डा./मी.टन और 648 अम. डा./मी. टन था तब भी सबसे सोचनीय विषय यह था कि कम दामों पर भी आयात की मात्रा में बढ़ोत्तरी देखी गई, जैसा कि नीचे दी गई सारणी में स्पष्ट है —

वर्ष	मात्रा मी.टन में		आयात मूल्य अम.डा.
अप्रैल - सितम्बर 08	8071	5.28 प्रतिशत	504.82
अक्तूबर 08	2975	1.85 प्रतिशत	518.36
नवम्बर 08	6192	3.40 प्रतिशत	444.12
दिसम्बर 08	27,394	27.17 प्रतिशत	538.38
जनवरी 09	97,182	38.78 प्रतिशत	468.35
फरवरी 09	129,963	61.71 प्रतिशत	450.24

(vii) अप्रत्याशित परिस्थितियाँ विश्व अर्थव्यवस्था में गिरावट के रूप में दिखाई देती हैं जिनमें माँग-आपूर्ति के बीच भारी अंतर आया है। परिणामतः प्रत्येक उत्पादक अपने उत्पाद की बिक्री बहुत कठिन मान रहा है और कीमतों में लगातार गिरावट जारी है। बाजार के कीमत संवेदनशील स्वरूप का होने के कारण भारतीय उपभोक्ताओं द्वारा आयातों का उत्तरोत्तर सहारा लिया जा रहा है।

(viii) आयातों में अत्यधिक वृद्धि होने के परिणामस्वरूप हाल की अवधि में उत्पादन/बिक्री तथा क्षमता उपयोग में भारी गिरावट आई है।

(ix) आवेदक ने दो वर्ष के लिए रक्षोपाय शुल्क का अनुरोध किया था। इसके अलावा, आपात परिस्थितियों के मद्देनजर आवेदक ने अनंतिम रक्षोपाय शुल्क तुरंत लगाने का अनुरोध किया है।

3. महानिदेशक के जांच परिणाम

क) तुरंत रक्षोपाय लागू करने के मुद्दे की जांच की गई थी। यह पाया गया है कि दिनांक 29.03.1995 से 12.11.2008 के बीच डब्ल्यूटीओ को कुल 168 रक्षोपाय जाँच की शुरुआत की सूचना दी गई थी। यह पाया गया है कि कई मामले में अनंतिम रक्षोपाय अतिशीघ्र संस्तुत किए गए हैं/उन्हें लागू किया गया है। वस्तुतः अनंतिम रक्षोपाय जाँच की शुरुआत की तारीख को ही संस्तुत किए गए हैं। दिनांक 29.07.1997 की अधिसूचना सं. 35/97-एनटी-सी.शु. के तहत अधिसूचित जारी सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं निर्धारण) नियम, 1997 के नियम 9 में यह निर्धारित है कि महानिदेशक जांच की कार्यवाही तुरंत शुरू करेगा और आपात परिस्थितियों में वह गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के खतरे के बारे में प्रारंभिक जांच परिणाम दर्ज कर सकता है। जांच को शासित करने वाले सिद्धांत रक्षोपाय नियम के नियम 6 में निर्धारित हैं जो नियम 9 से स्वतंत्र है। रक्षोपाय नियम के नियम 15 में जांच संपन्न होने के बाद पहले से अधिरोपित और संग्रहीत अनंतिम शुल्क से कम रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने के मामले में रक्षोपाय शुल्क में अंतर की वापसी का प्रावधान है। इसका तात्पर्य यह है कि यदि महानिदेशक अंततः रक्षोपाय शुल्क लागू करने की सिफारिश करता है तो संस्तुत और संग्रहीत समूचा रक्षोपाय शुल्क वापस कर दिया जाएगा। उक्त नियम के नियम 6, 9 और 15 के सुमेलित पाठन से यह निष्कर्ष निकलता है कि नियमों में प्रारंभिक जांच परिणामों के आधार पर अनंतिम रक्षोपाय शुल्क की तुरंत सिफारिश करने और इस बात की पुष्टि होने के बाद कि प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत का अनुपालन करते हुए नियम 6 के तहत जांच सम्पन्न होने के बाद लगाया गया शुल्क अनंतिम रक्षोपाय शुल्क से कम है तो उसके अंतर को वापस करने का प्रावधान है। तथापि आपात परिस्थितियों में अनंतिम रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने में होने वाले किसी विलंब से ऐसी क्षति हो सकती है जिसकी भरपाई करना कठिन होगा। तदनुसार, यह उचित माना गया था कि इस बात का निर्धारण करने के लिए इन परिस्थितियों का विश्लेषण किया जाए कि क्या ये आपात परिस्थितियों की श्रेणी में आते हैं जिनके अंतर्गत रक्षोपाय शुल्क को तुरंत लागू करना अपेक्षित है।

ख) विचाराधीन उत्पाद : - वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद 20 मि. मी. की मोटाई और 2000 मि.मी. की चौड़ाई वाली हॉट रोल्ड कॉयल्स/शीट/स्ट्रिप्स हैं और यह सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची 1 के उपशीर्ष सं. 7208 के अंतर्गत वर्गीकृत है। विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन और उसकी बिक्री अनेक ग्रेडों में की जाती है।

ग) घरेलू उद्योग- भारत में पाँच उत्पादक हैं जिनके पास विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन करने की क्षमता है और ये हैं- इस्पात इंड. लि., एस्सार स्टील लि., जेएसडब्ल्यू स्टील्स लि., भारतीय इस्पात प्राधिकरण लि. तथा टाटा स्टील्स लि.। यह आवेदन इस्पात इंड. लि. एवं एस्सार

स्टील लि. द्वारा दायर किया गया है। मै. जेएसडब्ल्यू स्टील्स लि. तथा भारतीय इस्पात प्राधिकरण ने याचिका का समर्थन किया है। वर्ष 2005-06 और अप्रैल, 08-फरवरी, 09 की अवधि के बीच आवेदक एवं समर्थनकर्ता का हिस्सा 79% से लेकर 81% तक रहा है।

घ) समग्र रूप से बढ़े हुए आयात : - आवेदक ने जून, 2008 तक की अवधि के लिए डीजीसीआई एंड एस द्वारा संकलित आयातों से संबंधित सूचना प्रदान की है। परवर्ती अवधि के लिए सूचना आईबीआईएस द्वारा संकलित सूचना पर आधारित है। दोनों ही सूचना सौदा-दर-सौदा आधार पर उपलब्ध कराई गई थी। चूंकि इस सूचना में हॉट रोल्ड उत्पादों के विभिन्न प्रकारों के आयात शामिल थे। इसलिए इस सूचना को विचाराधीन उत्पाद तथा अन्य उत्पादों के आयातों में विभाजित किया गया था और केवल विचाराधीन उत्पाद से संबंधित सूचना पर ही विचार किया गया है। विचाराधीन उत्पाद के आयात निम्नलिखित तालिका में दिए गए हैं-

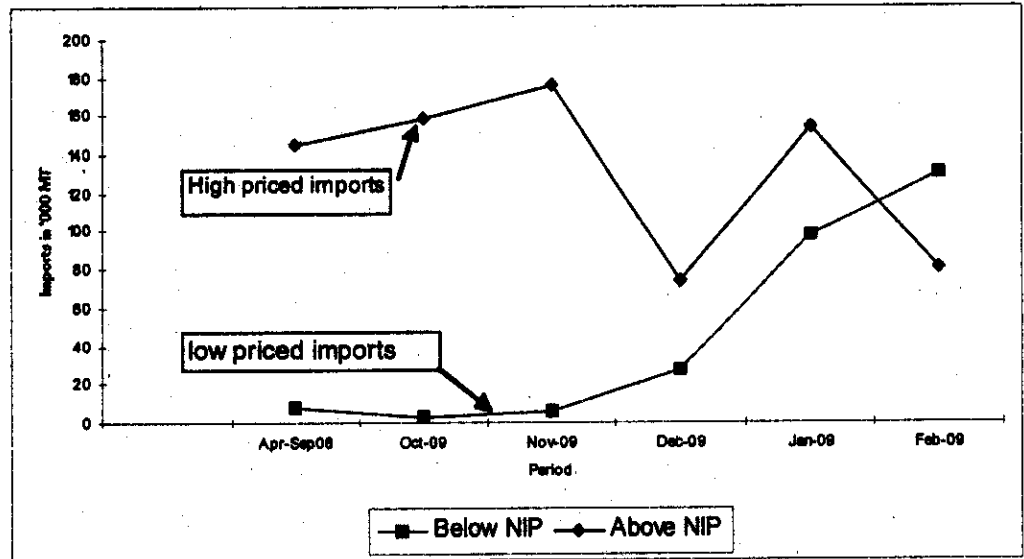
	आयात मात्रा	आयात प्रति माह	भारतीय उत्पादन	भारतीय उत्पादन प्रति माह	उत्पादन की तुलना में आयात
	लाख मी. टन	लाख मी. टन	लाख मी. टन	लाख मी. टन	%
2005-06	20.040	1.670	153.248	12.771	13.08%
2006-07	19.670	1.639	166.650	13.888	11.80%
2007-08	27.680	2.307	177.810	14.818	15.57%
अप्रैल- जून 08	6.770	2.257	38.080	12.693	17.78%
जुलाई-सित. 08	2.405	0.802	48.481	16.160	4.96%
अक्तू-दिस. 08	4.436	1.479	32.010	10.670	13.86%
जन.-फर. 09	4.612	2.306	27.260	13.630	16.92%

इस प्रकार यह देखा जाता है कि विचाराधीन उत्पादों के आयातों में अचानक, अत्यधिक, अप्रत्याशित तेजी से वृद्धि हुई है। इसके अलावा, यह भी देखा जाता है कि जनवरी, 08 तथा फरवरी, 08 में उत्पादन में हुई कुछ वृद्धि के बावजूद भारतीय उद्योग ने अपना बाजार हिस्सा आयातों अथवा माँग में गँवा दिया। आयात का अंश जुलाई - सितम्बर 2008 में 5 प्रतिशत से अक्टूबर-दिसम्बर 2008 में 13 प्रतिशत जा पहुँचा और पुनः जनवरी-फरवरी 2009 में 17 प्रतिशत पहुँचा।

(ड.) आवेदक ने तर्क दिया है कि आयात कीमतों में भारी गिरावट आई है जिससे आयातों में तेजी से और अत्यधिक वृद्धि हुई है। जिस कीमत पर विभिन्न आयात किए गए हैं उसका विस्तार से विश्लेषण किया गया है। आयात कीमतों के आधार पर आयातों को विभिन्न श्रेणियों में श्रेणीबद्ध किया गया था। ये श्रेणियाँ हैं- (क) 600 अम. डा./मी. टन से कम कीमत और (ख) 600 अम. डा. से अधिक यह मूल्य 600 अम.डा. इसलिए है क्योंकि यह एन.आई.पी (610 अम.डा.) के करीब है और जिसे निवेशित पूँजी के 5 प्रतिशत प्रतिगम पर लिया गया है या फिर जो आवेदक का, जो भी परिमित न्यूनतम मानदंड हो। इस मूल्य से कम में किये गये आयात सिर्फ क्षतिग्रस्त आयात की श्रेणी में आते हैं और इस मूल्य से अधिक पर किये गये आयात घरेलू उद्योग के लिए क्षति का कारण नहीं हो सकते।

अवधि	आयात मात्रा प्रति माह मी. टन में		भारतीय कीमत	आयात मात्रा का अनुपात	
	600 अम. डा. से कम	600 अम. डा. से अधिक		600 अम. डा. से कम	500 अम. डा. से अघ
अप्रैल 08- सित.08	8,071	144,836	5.28%	94.72%	40,031
अक्टू.-08	2,975	158,235	1.85%	98.15%	39,160
नव.-08	6,192	175,745	3.40%	96.60%	32,522
दिस.-08	27,394	73,420	27.17%	72.83%	28,513
जन.-09	97,182	153,421	38.78%	61.22%	27,467
फर.-09	129,963	80,641	61.71%	38.29%	26,296

उपर पैरा डी में विचार के उपरान्त यह पाया गया कि कुल आयात की बढ़ोत्तरी 55 प्रतिशत है वहीं उन आयातों की कुल बढ़ोत्तरी जो एन.आई.पी. से कम है या 600 अम.डा. से कम है वह समस्या उत्पन्न कर रहे हैं और जिनकी मात्रा अक्टूबर 2008 में 2975 मी.टन थी नवम्बर 2008 में 6192 मी.टन और दिसम्बर 2008 में 27394 मी.टन जा पहुँची। आयात पिछले माह जनवरी 2009 की तुलना में 256 प्रतिशत या 97182 मी.टन बढ़े जो पुनः फरवरी 2009 में 129963 मी.टन जा पहुँचे (पूर्व माह की अपेक्षा 4268 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी)। इस प्रकार की वृद्धि न केवल गम्भीर क्षति का कारण बन रही बल्कि गम्भीर क्षति की आशंका उत्पन्न कर रही है।



उपर्युक्त से यह स्पष्ट हो जाता है कि जहाँ कम कीमत के आयातों (600 अम. डा./मी. टन से कम) की पूर्ववर्ती मात्रा 1000-8000 मी. टन/माह के बीच रही थी वहीं जनवरी और फरवरी, 2009 में कम कीमत के आयातों की मात्रा अचानक बढ़कर क्रमशः 90000 मी. टन और मी. टन, अथवा जनवरी, 2009 में 2% से बढ़कर 36% और फरवरी, 2009 में 61% हो गई। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि कम कीमत पर हुए आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई है जबकि उच्च कीमत के आयातों में पर्याप्त गिरावट आई है। आयातों की मात्रा में यह वृद्धि तेजी से गिरती कीमतों के मद्देनजर हुई है जिससे घरेलू उद्योग की कीमतों पर असर पड़ा है घरेलू उत्पादन की कीमतों में

अप्रैल-सितम्बर 2008 में 40,000 अम.डा. से फरवरी 2009 में 26296 की गिरावट आई है और जो अनुवर्ती है। लाभ में उतनी अधिक गिरावट आई जिससे कि घरेलू उद्योग को अत्यधिक वित्तीय घाटा हुआ और लगाई गई पूंजी पर ऋणात्मक आय प्राप्त हुई जैसाकि गंभीर क्षति से संबंधित पैरा में विस्तार से चर्चा की गई है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि आयातों में वृद्धि जारी रहेगी जिससे आगे और गंभीर क्षति होगी। ये ऐसी परिस्थितियाँ हैं जिनमें आयात किए जा रहे हैं और इनसे गंभीर क्षति हो रही है तथा आगे और गंभीर क्षति होने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

छ) भारत में उत्पादन एवं खपत की तुलना में संवर्धित आयात- इस बात की जाँच की गई थी कि क्या विचाराधीन उत्पाद के आयातों में भारत में उत्पादन और खपत की तुलना में वृद्धि हुई है। निम्नलिखित तालिका से वास्तविक स्थिति का पता चलता है-

वर्ष		2005-06	2006-07	2007-08	अप्रैल- सित. 08	अक्तू.-फर. 09
आयात (लाख मी. टन)	1	20.04	19.67	27.68	9.17	9.05
घरेलू उत्पादन (लाख मी. टन)	2	153.25	166.65	177.81	86.56	59.27
कुल उपलब्ध मात्रा (लाख मी. टन)	3=1+2	173.29	186.32	205.49	95.74	68.32
आयात का % हिस्सा	4=1/3	11.56%	10.56%	13.47%	9.58%	13.25%
घरेलू उत्पादन का % हिस्सा	5=2/3	88.44%	89.44%	86.53%	90.42%	86.75%
घरेलू उद्योग की बिक्री	6	76.07	90.59	96.39	44.46	31.92
भारत में खपत	7=1+6	96.11	110.26	124.07	53.63	40.98
बाजार हिस्सा						
आयात	8=1/7	20.85%	17.84%	22.31%	17.11%	22.09%
घरेलू उद्योग	9=6/7	79.15%	82.16%	77.69%	82.89%	77.91%

इस प्रकार यह देखा जाता है कि वर्ष 2007-08 में आयातों के हिस्से में भारतीय उत्पादन और खपत दोनों की तुलना में वृद्धि हुई है। तथापि, हिस्से में अप्रैल-सितम्बर, 2008 में कुछ समय के लिए कमी आई जब औसत आयात कीमतों में वृद्धि हुई थी। आयातों का बाजार हिस्सा अप्रैल-सितम्बर, 2008 में 17% से बढ़कर अक्टूबर, 08-फरवरी, 09 में 22% हो गया। बाजार हिस्से में हुई यह तीव्र वृद्धि इन उत्पादों की आयात कीमत में हाल ही में आई तीव्र गिरावट के कारण हुई है और परिणामतः जनवरी और फरवरी, 2009 की अवधि में आयातों में वृद्धि हुई है। अप्रैल-सितम्बर, 2008 के दौरान औसत कीमत 1054 अम. डा./मी. टन रही थी और यह जनवरी, 09 के माह में घटकर 858 अम. डा. हो गई तथा फरवरी, 09 में 648 अम. डा. हो गई। तथापि, 500 अम. डा. से कम के आयात कीमत का रुख देखने के लिए आंकड़ों को और विभक्त किया गया तो यह नोट किया गया कि आयात अत्यधिक मात्रा में किए जा रहे थे जिन्होंने न केवल अधिक कीमत वाले आयातों को प्रतिस्थापित कर दिया था परंतु घरेलू बाजार को भी प्रतिस्थापित कर दिया था जिसके परिणामस्वरूप आयातों का बाजार हिस्सा अत्यधिक हो गया। अपीलकर्ता ने जो पेशकश की है वह 380 अम. डा. अथवा इससे कम कीमत पर की जा रही है। इस प्रकार, कीमत में 50% से अधिक की गिरावट आई है। घरेलू उद्योग ने यह अभ्यावेदन दिया कि आपूर्ति हेतु हाल के प्रस्ताव 400 अम. डा. (380 अम. डा. से भी कम)/मी. टन के रहे थे। असामान्य रूप से कम कीमत की वजह से घरेलू उद्योग को घटी हुई लाभप्रदता तथा लगाई गई पूंजी पर आय पर प्रभाव के रूप में चिंता उत्पन्न हुई है और इस प्रकार गंभीर क्षति हुई है और उसका खतरा उत्पन्न हो गया है।

इस प्रकार यह देखा जाता है कि आयातों में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन तथा खपत की तुलना में वृद्धि हुई है, जिसके कारण गंभीर क्षति हुई है और गंभीर क्षति का खतरा बना हुआ है।

ज. अप्रत्याशित घटनाक्रम : - आयातों से संबंधित सूचना और ऊपर किए गए उल्लेख से यह देखा जाता है कि उत्पाद की आयात कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है। आवेदकों ने “वर्ल्ड स्टील डायनामिक्स, स्टीलोमीटर, स्टील बेंचमार्कर, इन्साइड ट्रैक, ग्लोबल स्टील फाइनेंस” की प्रतियाँ उपलब्ध कराई हैं। आवेदकों ने दावा किया है कि देश में ये अत्यंत लोकप्रिय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पत्रिकाएँ/समाचार बुलेटिन हैं। इन पत्रिकाओं के साथ-साथ आवेदकों के अनुरोधों से यह पता चलता है कि (क) इस उत्पाद के वैश्विक उत्पादकों ने उत्पाद की माँग में अत्यधिक गिरावट का सामना किया है, (ख) उत्पाद की माँग में गिरावट अचानक एवं अप्रत्याशित वर्तमान वैश्विक आर्थिक मंदी के कारण आई है, (ग) इस्पात का उत्पादन इस प्रकार का है कि उत्पादक वांछित सीमा तक उत्पादन को विनियमित नहीं कर सकते हैं, (घ) वैश्विक उत्पादक सामग्री को बेचने के अत्यधिक दबाव में हैं, (ङ.) अत्यधिक कीमत संवेदनशील बाजार होने के कारण किसी उत्पादक द्वारा एक बार कम कीमत पर आपूर्ति का प्रस्ताव किए जाने की स्थिति में दूसरों के पास अपनी कीमतें कम करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। परिणामतः कीमतों में सतत गिरावट आती है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि कीमतों को कम करने की प्रवृत्ति अभी भी बंद नहीं हुई है और उत्पादकों द्वारा कीमतों में आगे और कमी की जा रही है। इन पत्रिकाओं के आधार पर घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि हाल की अवधि में इस सामग्री की पेशकश 380 अम. डा./मी. टन से कम कीमत पर की जा रही है, (घ) घरेलू उद्योग ने तर्क दिया था कि आयातों की बुकिंग और खेप के आने के बीच कम से कम दो माह का समयांतराल होता है तथापि घरेलू उत्पादकों को विदेशी उत्पादकों द्वारा कम कीमतों पर प्रतिक्रिया देनी होती है जब ये खेपें भारतीय पत्तनों पर आती हैं। घरेलू उद्योग का तर्क है कि फरवरी, 2009 में ही 450 अम. डा./मी.टन की औसत कीमत पर लगभग एक लाख मी. टन सामग्री मुंबई पत्तन पर पहुंच गई है।

इस प्रकार, यह देखा जा सकता है कि वर्तमान आर्थिक मंदी के कारण विचाराधीन उत्पाद की माँग में अंतर्राष्ट्रीय रूप से गिरावट आई है जिसके परिणामस्वरूप विचाराधीन उत्पाद के वैश्विक उत्पादकों के पास अभूतपूर्व और असामान्य बेशी क्षमताएँ रह गई हैं। इससे वैश्विक उत्पादक घटी हुई कीमतों पर भी बाजार तलाशने के लिए बाध्य हुए हैं। इससे उत्पाद की कीमत में अचानक और पर्याप्त गिरावट आई है। इसके अलावा, कीमतों में आने वाली ऐसी गिरावट एक बार का परिदृश्य नहीं होता है। यह मृदुलाबद्ध प्रतीत होता है। एक आपूर्तिकर्ता द्वारा प्रस्तावित कीमत कटौती से दूसरे आपूर्तिकर्ता अपने उत्पाद की कुछ माँग प्राप्त करने के लिए ऑर्डर में अधिक कीमत कमी की पेशकश करते प्रतीत होते हैं। विशाल भारतीय उच्च कीमत संवेदनशील बाजार विदेशी उत्पादकों की पसंद बन रहा है जिससे कम कीमत के आयातों में भारी वृद्धि हो रही है।

इस प्रकार, ये रक्षोपाय संबंधी डबल्यूटीओ करार और भारतीय रक्षोपाय कानून के अर्थ के भीतर अप्रत्याशित घटनाक्रम हैं।

(झ) गंभीर क्षति तथा गंभीर क्षति का खतरा- इस बात की जांच की गई है कि क्या उक्त वस्तु के आयातों के कारण घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हुई है। इस बात की भी जाँच की गई थी कि क्या उक्त वस्तु के संवर्धित आयातों से घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति होने का खतरा उत्पन्न हुआ है। उक्त वस्तु के आयातों में समग्र रूप में तथा भारत में उत्पादन एवं खपत की तुलना में अचानक और पर्याप्त वृद्धि देखी गई है। यह नोट किया जाता है कि आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई और यह तेजी से गिरती आयात कीमतों पर हुई। आवेदकों ने दावा किया है कि हाल ही में उक्त

उत्पाद की पेशकश कीमतों में तेजी से गिरावट आई है और यह 380 अम. डा. से भी कम हो गयी है। घरेलू उद्योग अपनी कीमतें कम करने पर विवश हो गया है, क्योंकि ग्राहक समान आयात कीमतें चाहते थे। घरेलू उद्योग अपनी लागत से भी कम कीमत पर बिक्री करने पर विवश हो गया है।

(ग) घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति के संबंध में नियमों में निम्नानुसार उपबंध है-

महानिदेशक अन्य बातों के साथ-साथ इन नियमों के अनुबंध में निर्धारित सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग को हुई गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के खतरे का निर्धारण करेगा।

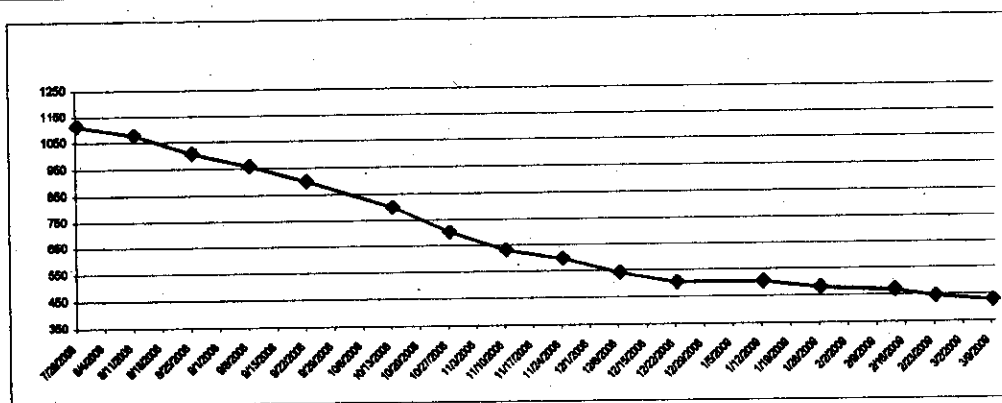
नियमावली के अनुबंध में निम्नानुसार प्रावधान है

इस बात का निर्धारण करने कि क्या संवर्धित आयातों से किसी घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हुई है या उसका खतरा उत्पन्न हुआ है, से संबंधित जांच में महानिदेशक उक्त उद्योग की स्थिति पर खासकर समग्र एवं तुलनात्मक रूप में संवर्धित वस्तु के आयातों में वृद्धि की दर और उसकी मात्रा, संवर्धित आयातों द्वारा प्राप्त घरेलू बाजार का हिस्सा, बिक्री स्तर में परिवर्तन, उत्पादन, उत्पादकता, क्षमता उपयोग, लाभ एवं हानि और रोजगार के स्तर में परिवर्तन के रूप में प्रभाव डालने वाले तथ्यपरक एवं अनुमेय स्वरूप के समस्त संगत कारकों का मूल्यांकन करेगा।

जैसाकि डब्ल्यूटीओ का अभिमत है, यह आवश्यक नहीं है कि नियमावली में उल्लिखित प्रत्येक मानदण्ड क्षति दर्शाता हो यदि एक या दो मानदण्ड भी कार्य निष्पादन में उल्लेखनीय गिरावट दर्शाते हैं, तो यह मान लेने का पर्याप्त कारण है कि घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति पहुँची है।

जैसाकि ऊपर उल्लेख किया गया है, विचाराधीन उत्पाद के आयातों में अचानक और पर्याप्त वृद्धि देखी गई है। आयातों में वृद्धि की दर और मात्रा समग्र रूप में और तुलनात्मक रूप में काफी अधिक है। जहाँ तक घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचाने वाले संवर्धित आयातों के प्रभाव का संबंध है, इसका विश्लेषण नीचे किया गया है।

(ख) कीमत प्रभाव- इस बात का निर्धारण करने के लिए कि क्या विचाराधीन उत्पाद के आयातों द्वारा बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती की जा रही है, आयातों की पहुँच कीमत की तुलना घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत के साथ की गई है। यह नोट किया जाता है कि आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई है जहाँ आयात कीमत 500 अम. डा./मी. टन से कम रही है। वस्तुतः केवल फरवरी, 09 में ही 450 अम. डा./मी. टन की औसत कीमत पर संबद्ध वस्तु के लगभग एक लाख मी. टन का आयात किया गया है। इस प्रकार, यह देखा जाता है कि आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम रही थी। मेटल बुलेटिन में सूचित सीआईएफ आयात कीमतें निम्नानुसार दर्शाई गई हैं।



घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि आयात कीमतों में कमी की प्रवृत्ति अक्टूबर, 2008 में इसी समय शुरू हुई थी और अब यह बंद हो गई है। आयात कीमतें 1000 अम. डा./मी. टन से अधिक के स्तर से कम होनी शुरू हुई और इनमें अभी भी गिरावट जारी है। घरेलू उद्योग ने यह प्रदर्शित करने के लिए साक्ष्य उपलब्ध कराया है। आयात कीमतें घटकर 380 अम. डा./मी. टन से भी कम हो गई हैं। आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है। यह नोट किया जाता है कि आयातों से घरेलू उद्योग की कीमत में भारी कटौती हो रही है।

आयातों द्वारा कीमत में अत्यधिक कटौती होने के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग अपनी कीमत कम करने के लिए बाध्य हुआ है। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है जैसाकि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकेगा। इस प्रकार यह देखा जाता है कि आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत का ह्रास हो रहा है।

आगे इस बात की जाँच की गई थी कि क्या घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट निविष्टि लागत में गिरावट के कारण आई है। यह नोट किया गया था कि यद्यपि इस अवधि में निविष्टि लागत में गिरावट आई है तथापि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में आई गिरावट निविष्टि कीमत में कमी के कारण उत्पादन लागत में आई गिरावट से काफी अधिक थी जैसाकि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकेगा। परिणामतः घरेलू उद्योग के अंशदान मार्जिन में तेजी से गिरावट आई है।

इस्पात उत्पादन के लिए अपेक्षित प्रमुख निविष्टियों की कीमतें

नाम	को समाप्त तिमाही	को समाप्त तिमाही	को समाप्त तिमाही	को समाप्त तिमाही	को समाप्त तिमाही	को समाप्त तिमाही	को समाप्त तिमाही	माह	माह
	जून-07	सित.-07	दिस.-07	मार्च-08	जून-08	सित.-08	दिस.-08	जन.-09	फर.-09
लौह अयस्क	5,545	5,887	6,031	6,261	10,504	5,976	4,515	-	5,846
मेटकोक	9,746	10,463	11,032	13,316	23,487	30,266	28,226	19,812	-
कोयला	5,455	5,143	5,468	5,520	7,110	10,856	15,056	12,237	15,487
प्राकृतिक गैस	10,328	8,899	10,543	12,379	15,225	17,499	35,690	20,950	25,625
स्क्रेप	30,185	25,624	25,934	21,140	26,732	32,017	23,482	16,061	16,968

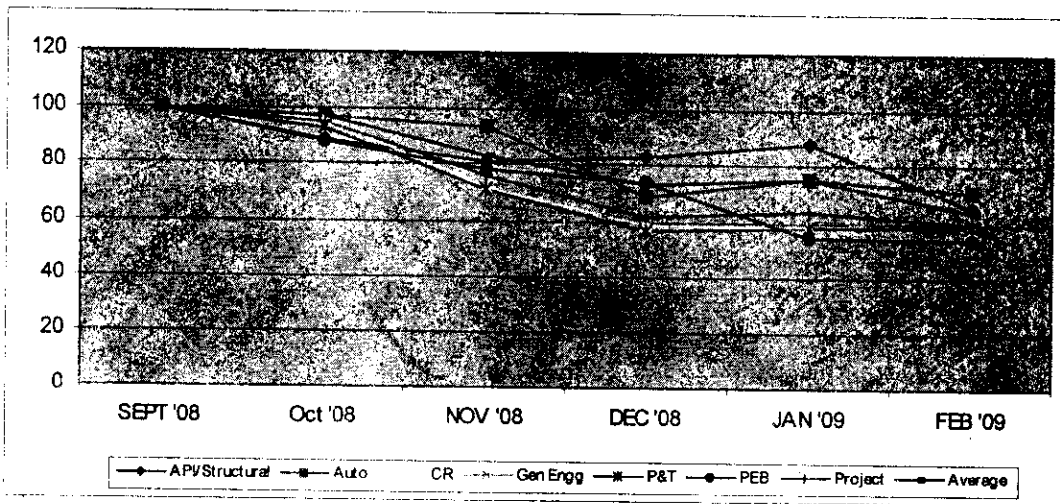
स्रोत: सितम्बर, 2008 तक की अवधि के लिए डीजीसीआई एंड एस और उसके बाद आईबीआईएस द्वारा सूचित भारत के आयात

उपर्युक्त को प्रथम तिमाही में कीमत 100 के रूप में मानते हुए सूचीबद्ध आधार पर दर्शाया गया है।

अनुप्रयोग	जून, 07 को समाप्त तिमाही	सित., 07 को समाप्त तिमाही	दिस., 07 को समाप्त तिमाही	मार्च, 08 को समाप्त तिमाही	जून, 08 को समाप्त तिमाही	सित., 08 को समाप्त तिमाही	अक्तू-दिस. 08	जनवरी 09	फरवरी 09
लोह अयस्क	100	106	109	113	189	108	81	81	105
भट्टकोक	100	107	113	137	241	311	290	203	
कोयला	100	94	100	101	130	199	276	224	284
प्राकृतिक गैस	100	86	102	120	147	169	346	203	248
स्क्रेप	100	85	86	70	89	106	78	53	56

अनुप्रयोग के विभिन्न खण्डों में घरेलू उद्योग की कीमत में उतार-चढ़ाव निम्नानुसार रहा है।

प्रेड	जून, 07	सित., 07	दिस., 07	मार्च, 08	जून, 08	सित., 08	अक्तू-दिस. 08	जनवरी 09	फरवरी 09
एपीआई/स्ट्रक्चरल	100	89	81	83	88	65			
ऑटो	100	97	94	69	75	71			
सीआर	100	96	72	59	58	58			
जेन इंजीनियरिंग	100	103	65	61	61	57			
पी एंड	100	93	71	57	58	59			
पीईबी	100	88	78	74	55	54			
परियोजना	100	95	76	62	64	60			
	100	97	83	73	75	64			



यह देखा जाता है कि कम कीमत के आयातों में हुई वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग कीमत घटाने के लिए बाध्य हुआ है। कीमत में ऐसी गिरावट उत्पादन लागत में गिरावट की तुलना में अधिक थी। इस प्रकार आयातों का घरेलू कीमतों पर प्रतिकूल कीमत प्रभाव पड़ा है और लाभ तथा आरओसीई में इतनी संदी आ गई है कि घरेलू उद्योग को उल्लेखनीय वित्तीय घाटा हुआ है और आरओसीई नकारात्मक हो गया है।

ग) उत्पादन- आवेदकों द्वारा उक्त उत्पाद का उत्पादन वर्ष 2005-06 में 47.20 लाख मी. टन से बढ़कर 2006-07 में 56.32 लाख मी. टन और 2007-08 में पुनः बढ़कर 61.13 लाख एवं

अप्रैल-सितंबर, 2008 में बढ़कर 32.94 लाख मी. टन हो गया है। तथापि, यह उत्पादन अक्तूबर-दिसंबर, 2008 में अत्यधिक गिरकर 8.34 लाख मी. टन हो गया है। यद्यपि उत्पादन में जनवरी-फरवरी, 2009 में मामूली सुधार हुआ जो 7.40 लाख मी. टन हो गया तथापि यह पूर्ववर्ती स्तर से काफी कम रहा है।

वर्ष	उत्पादन लाख मी. टन में	
	अवधि के लिए	मासिक
2005-06	47.20	3.93
2006-07	56.32	4.69
2007-08	61.13	5.09
अप्रैल-सित. 08	32.94	5.49
अक्तू.-दिस. 08	8.34	2.78
जन.-फर. 09	7.40	3.70

घ) क्षमता उपयोग- आवेदकों का क्षमता उपयोग वर्ष 2005-06 में 83% से बढ़कर 2006-07 में 85% और 2007-08 में पुनः बढ़कर 92% एवं अप्रैल-सितंबर, 2008 में बढ़कर 96% हो गया है। तथापि, क्षमता उपयोग अक्तूबर-दिसंबर, 2008 में अत्यधिक गिरकर 49% हो गया है। यद्यपि क्षमता उपयोग में जनवरी-फरवरी, 2009 में मामूली सुधार हुआ जो 65% हो गया तथापि यह पूर्ववर्ती स्तर से काफी कम रहा है।

वर्ष	क्षमता उपयोग
2005-06	83 %
2006-07	85 %
2007-08	93 %
अप्रैल-सित. 08	96 %
अक्तू.-दिस. 08	49 %
जन.-फर. 09	65 %

यह नोट किया जाता है कि क्षमता उपयोग में यद्यपि जनवरी-फरवरी, 2009 में वृद्धि हुई तथापि वह अभी भी काफी कम है। इसके अलावा, इसे इस संदर्भ में भी देखा जाना चाहिए कि यद्यपि उत्पादन में जनवरी, 09-फरवरी, 09 के दौरान मामूली वृद्धि हुई तथापि इस अवधि के दौरान आयातों का बाजार हिस्सा 17% से बढ़कर 22% हो गया। यह उद्योग को गंभीर क्षति और गंभीर क्षति का खतरा प्रदर्शित करता है, क्योंकि एक ओर जहाँ पहुँच लागत हाल ही की घरेलू उद्योग की कीमतों से कम है, वहीं दूसरी ओर कच्चे माल की लागत की तुलना में घरेलू कीमतों में तेजी से गिरावट आई है, जिसके कारण घाटा हुआ है और आयातों में भारी वृद्धि हुई है एवं घरेलू उद्योग को क्षति का गंभीर और निर्णायक खतरा हो गया है।

(ड.) घरेलू बिक्री : आवेदकों द्वारा उक्त उत्पाद की घरेलू बिक्री वर्ष 2005-06 में 20.94 लाख मी. टन से बढ़कर 2006-07 में 28.85 लाख मी. टन और 2007-08 में पुनः बढ़कर 31.71 लाख एवं अप्रैल-सितंबर, 2008 में बढ़कर 16.77 लाख मी. टन हो गई। तथापि, बिक्री में अक्तूबर-दिसंबर, 2008 में भारी गिरावट आई जो घटकर 5.0 लाख मी. टन हो गई। यद्यपि बिक्री में जनवरी-फरवरी, 2009 में मामूली सुधार हुआ जो बढ़कर 4.19 लाख मी. टन हो गई तथापि यह पूर्ववर्ती स्तर से काफी कम है।

वर्ष	बिक्री लाख मी. टन में	
	अवधि के लिए	मासिक
2005-06	20.94	1.79
2006-07	28.85	2.40
2007-08	31.71	2.64
अप्रैल-सित. 08	16.77	2.80
अक्तू.-दिस. 08	5.09	1.70
जन.-फर. 09	4.19	2.10

(च) बाजार हिस्सा- आवेदकों के बाजार हिस्से में अत्यधिक गिरावट आई है। वर्ष 2005-06 के दौरान आवेदकों का बाजार हिस्सा 21.79% तथा 2006-07 में 26.17% था। बाजार हिस्सा वर्ष 2007-08 में बढ़कर 25.56% और अप्रैल-सितंबर, 2008 में 31.27% हो गया। तथापि, अक्तूबर-दिसंबर, 08 में बाजार हिस्सा घटकर 24.50% और जनवरी, 09-फरवरी, 09 में आगे और घटकर 20.79% हो गया। समस्त घरेलू उत्पादकों का हिस्सा भी जनवरी-फरवरी, 2009 की अवधि में घटा है।

वर्ष	माँग में आवेदकों का बाजार हिस्सा
2005-06	21.79 %
2006-07	26.17 %
2007-08	25.56 %
अप्रैल-सित. 08	31.27 %
अक्तू.-दिस. 08	24.50 %
जन.-फर. 09	20.79 %

(छ) लाभ/हानि : आवेदकों की लाभप्रदता में भारी गिरावट आई है। यद्यपि घरेलू उद्योग सितंबर, 2008 तक लाभ में चल रहा था तथापि उसे सितंबर, 2008 के बाद वित्तीय घाटा होना शुरू हो गया। इस घाटे में उसके बाद और वृद्धि हुई। आवेदकों ने वर्ष 2006-07 में 222.57 करोड़ रु., 2007-08 में 93.99 करोड़ रु. और अप्रैल-सितंबर, 2008 में 370.78 करोड़ रु. का लाभ कमाया है। तथापि, आवेदकों को अक्तूबर-दिसंबर, 2008 में 234.51 करोड़ रु. और जनवरी, 09-फरवरी, 09 में 369.31 करोड़ रु. का वित्तीय घाटा हुआ है।

अवधि	लाभ/हानि करोड़ रु. में	लगाई गई पूंजी पर % आय
2005-06	(544)	(0.08)
2006-07	222	9.58
2007-08	94	8.87
अप्रैल, 08-सित. 08	371	24.81
अक्तू. 08-दिस. 08	(235)	(3.53)
जन., 08- फर. 09	(369)	(8.91)

आवेदकों ने दावा किया है कि यद्यपि संबद्ध वस्तु के उत्पादन के लिए अपेक्षित निविष्टियों की कीमत में गिरावट आई है तथापि उत्पाद कीमत में आई गिरावट निविष्टियों की लागत में

गिरावट से काफी अधिक रही थी। बिक्री की प्रति इकाई अंशदान (अर्थात् बिक्री कीमत और कच्ची सामग्री के कारण लागत के बीच अंतर) में भारी गिरावट आई है जैसाकि निम्नलिखित से स्पष्ट हो जाता है।

अवधि	अंशदान मार्जिन	
	रु./मी. टन	सूचीबद्ध
2005-06	6374	100
2006-07	9391	147
2007-08	8979	141
अप्रैल, 08-सित. 08	12911	203
अक्तू, 08.-दिस. 08	6967	109
जन., 08- फर. 09	3933	62

लाभ में गिरावट के परिणामस्वरूप लगाई गई पूंजी पर आय में अत्यधिक कमी आई। आवेदकों ने वर्ष 2006-07 में निवेश पर 10% आय, 2007-08 में 9% और अप्रैल-सितंबर, 2008 में 24.81% लाभ कमाया। अक्टूबर-दिसंबर, 2008 में निवेश पर आय ऋणात्मक (4%) हो गई और जनवरी, 09-फरवरी, 09 (9%) हो गई।

(ज) रोजगार :- यह नोट किया जाता है कि रोजगार के स्तर से क्षति का पता नहीं चलता है। घरेलू उद्योग ने अर्थव्यवस्था में आए उछाल के मद्देनजर अप्रैल-सितंबर, 08 की अवधि के बाद अतिरिक्त कार्मिकों की नियुक्ति की थी और वर्तमान संकट के दौरान यह वर्धित रोजगार लागत में वृद्धि कर रहा है। आवेदकों ने दावा किया है कि कंपनी के कड़े नियमों एवं विनियमों के कारण कंपनी में स्थायी रोजगार को अल्पावधि में कम नहीं किया जा सका।

(झ) उत्पादकता :- घरेलू उद्योग की प्रति कर्मचारी उत्पादकता उत्पादन के अनुरूप रही है। उत्पादकता में सितंबर, 2008 तक वृद्धि हुई किंतु उसके बाद उसमें अक्टूबर-दिसंबर, 2008 तथा जनवरी-फरवरी, 2009 में गिरावट आई। आवेदकों ने दावा किया है कि उत्पादकता में गिरावट संवर्धित आयातों के कारण आई है। आवेदकों ने आगे यह दावा किया है कि यद्यपि उत्पादकता के स्तर को अप्रैल-सितंबर, 2008 के स्तर के समान रखा गया था तथापि उन्हें वित्तीय घाटा उठाना पड़ा है।

(ट) मालसूची :- आवेदकों की मालसूची वर्ष 2005-06 में 0.89 लाख मी. टन की थी जो 2006-07 में घटकर 0.82 लाख मी. टन हो गई। यह वर्ष 2007-08 में कमोबेश 0.85 लाख मी. टन के स्तर पर बनी रही। अप्रैल, 08-सितंबर, 08 में मालसूची बढ़कर 1.72 लाख मी. टन हो गई जो अक्टूबर, 08-दिसंबर, 08 में घटकर 0.63 लाख मी. टन और जनवरी-फरवरी, 08 में 0.46 लाख मी. टन हो गई। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि मालसूची में गिरावट का कारण मालसूची को विनियमित किया जाना है। घरेलू उद्योग कम बिक्री मात्रा के कारण अपना उत्पादन विनियमित करने लिए बाध्य हुआ है अन्यथा मालसूची का स्तर और अधिक रहा होता।

अवधि	मालसूची लाख मी. टन में
2005-06	0.89
2006-07	0.82
2007-08	0.85
अप्रैल, 08-सित. 08	1.72
अक्तू, 08.-दिस. 08	0.63
जन., 08- फर. 09	0.46

(ठ) संवर्धित आयातों तथा गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के खतरे के बीच कारणात्मक संबंध

जैसाकि उपर्युक्त से स्पष्ट है, यह देखा जाता है कि विदेशी आपूर्तिकर्ताओं द्वारा भारत को निर्यातित अपनी कीमतों में रूक-रूककर कमी की जा रही है। घरेलू उद्योग ने सफाई दी है कि आयात कीमत में गिरावट की प्रवृत्ति सितंबर- अक्टूबर 08 में शुरू हुई और यह अब तक जारी है। परिणामतः घरेलू उद्योग कीमत कम करने के लिए बाध्य हुआ। चूँकि कीमत कटौती आयातों द्वारा हो रही है इसलिए इससे घरेलू उद्योग की कीमत में आई गिरावट उत्पादन लागत से अधिक रही है। परिणामतः घरेलू उद्योग के वित्तीय घाटे में भारी इजाफा हुआ है। घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में कमी के बावजूद आयात की मात्रा में वृद्धि हुई जिससे घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा और बाजार हिस्से में गिरावट आई। घटती घरेलू कीमतों के बावजूद, जिसकी दर कच्चे माल की कीमतों में गिरावट से अधिक थी, घरेलू उद्योग हाल ही की कम पहुँच लागत का सामना नहीं कर सका और उसने बाजार हिस्सा गँवा दिया, जिसकी परिणति गंभीर क्षति में हुई। चूँकि आयात कीमतों में कमी का रुख अभी चल रहा है अतः यह भी गंभीर क्षति के खतरे का मामला बनता है। इस प्रकार यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग को क्षति निराशाजनक रूप से कम कीमतों पर संवर्धित आयातों के कारण हुई थी।

(ड) अन्य कारक

आवेदकों ने पाटनरोधी निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष पाटनरोधी आवेदन दायर किया है। यह जाँच अधिसूचना सं. 14/23/2008, दिनांक 28.11.2008 के तहत शुरू की गई है, जिसकी जाँच अवधि अप्रैल, 07-सितंबर, 08 है। इस प्रकार, निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा विचार की जा रही जाँच अवधि और वर्तमान जाँच में विचार की जा रही अवधि अलग-अलग है। यह नोट किया जाता है कि ऐसा कोई अन्य कारक प्रतीत नहीं होता है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो।

(ढ) विकासशील राष्ट्र : भारत में आयातों का हिस्सा- चीन जन. गण., रूस, कोरिया गणराज्य, जापान, तुर्की, कजाकिस्तान तथा थाइलैंड से आयात हुए हैं जो 3% से अधिक हैं, जिनका ब्यौरा निम्नानुसार है-

स्रोत	मात्रा मी. टन	हिस्सा
3% से अधिक		
चीन जन. गण.	331,508	36.62%
थाइलैंड	42,401	4.68%

अन्य विकासशील देशों को मिलाकर इन उत्पादों के निर्यात का भारत को किए गए निर्यातों में योगदान 9.28% है। तदनुसार, चीन जन. गण., रूस, कोरिया गणराज्य, जापान, तुर्की, कजाकिस्तान तथा थाइलैंड को छोड़कर दिनांक 12.12.1998 की अधिसूचना सं. 103/98 (यथासंशोधित) द्वारा यथाअधिसूचित सभी विकासशील राष्ट्रों से विचाराधीन उत्पाद के आयात पर रक्षोपाय शुल्क नहीं लगता।

(ण) समायोजन योजना : घरेलू उत्पादकों ने ब्याज की लागत में कमी, अवसंरचना के व्यय में वृद्धि और कीमत निर्धारण के रूप में घरेलू कच्चे माल की उपलब्धता में स्थिरता के माध्यम से विनिर्माण की लागत में कमी करने हेतु उपाय प्रस्तावित किए हैं।

(त) आपात परिस्थितियों : आपात परिस्थितियों का विस्तृत ब्यौरा पूर्वोक्त पैराग्राफों में स्पष्ट किया गया है। इसके अलावा, सितंबर, 2008 तक आवेदक लाभ कमा रहे थे जबकि उन्हें वर्तमान अवधि में अभूतपूर्व वित्तीय घाटा हुआ है (जनवरी-फरवरी, 2009 माह में ही आवेदकों को लगभग 369 करोड़ रु. का वित्तीय घाटा हुआ)। आयात कीमत में आगे और गिरावट आती है तो घरेलू उत्पादकों के घाटे में आगे और वृद्धि हो जाएगी।

(थ) उपर्युक्त के मद्देनजर घरेलू उत्पादक को होने वाली उस क्षति जिसकी भरपाई रक्षोपाय लागू करने में विलंब होने से कठिन होगी, से बचाने के लिए अनंतिम रक्षोपाय तुरंत लागू करने को न्यायोचित ठहराने वाली आपात परिस्थितियाँ मौजूद हैं।

(द) निष्कर्ष एवं सिफारिश : उपर्युक्त प्रारंभिक जांच परिणामों के आधार पर यह देखा जाता है कि उक्त उत्पाद के संवर्धित आयातों से उक्त उत्पाद के घरेलू उत्पादकों को गंभीर क्षति हुई है। इसके अलावा, संवर्धित आयातों से घरेलू उद्योग को आगे और भरपाई न किए जाने योग्य गंभीर क्षति होने का खतरा उत्पन्न हो गया है। रक्षोपाय शुल्क लागू किये जाने में यदि विलम्ब हुआ तो आपात परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। जिसकी भरपाई करना कठिन होगा। इसी परिस्थिति को रोकने हेतु तात्कालिक प्रभाव से 200 दिनों के लिए अन्तिम रक्षोपाय शुल्क लागू करने हेतु आवेदन जरूरी है। घरेलू उत्पादक द्वारा विचाराधीन उत्पाद (गोपनीय) के औसतन मूल्य को ध्यान रखते हुए, लगी हुई पूँजी पर मुनासिब 5 प्रतिशत का प्रतिगम (आर.ओ.सी. पर) वर्तमान में आयात पर लगा हुआ शुल्क जिसमें पाटनरोधी शुल्क और विचाराधीन उत्पाद का औसतन आयात मूल्य, छोर प्रयोक्ता की रूचि को देखते हुए कथित उत्पादकों पर 25 प्रतिशत का अन्तिम रक्षोपाय शुल्क जिसमें 600 अम.डा./मी.टन का सी.आई.एफ. मान शामिल हो लगाए जाने की मांग की गई है, जिससे घरेलू उद्योग को क्षति से बचाया जा सके और हॉट रोल्ड कॉयल्स/शीट्स/स्ट्रिप्स जिनकी मोटाई 20 एम.एम. और 2000 एम.एम. है और जो कि कस्टम टैरिफ अधिनियम 1975 की अनुसूची 1 की उप-शीर्षक संख्या 7208 में वर्गीकृत है उस पर रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की गई है।

तथापि जिन उत्पादों के आयात पर पाटनरोधी शुल्क लागू किया गया अथवा लागू होगा उन आयातों के उत्पाद पर लागू पाटनरोधी शुल्क के साथ 25 प्रतिशत के अन्तर पर अन्तिम रक्षोपाय शुल्क लागू किया जायेगा। इसके अतिरिक्त उन उत्पादों हेतु जहाँ पर पाटनरोधी शुल्क अन्तिम रक्षोपाय शुल्क से अधिक हो या होने की सम्भावना उन उत्पादों पर अन्तिम रक्षोपाय शुल्क लागू नहीं किया जाएगा। तथापि अन्य आयातों पर उपर पैरा-डी में यथा निर्धारित रक्षोपाय शुल्क लागू किया जायेगा।

(घ) आगे की प्रक्रिया :

(क) विभिन्न पार्टियों द्वारा प्रदत्त सूचना का आवश्यकतानुसार सत्यापन किया जा सकता है जिसके बारे में उन्हें अलग से सूचना दी जाएगी।

(ख) अंतिम निर्धारण करने से पूर्व यथासमय सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की जाएगी जिसकी तारीख के बारे में अलग से सूचना दी जाएगी।

(ग) इस प्रारंभिक जांच परिणाम पर हितबद्ध पार्टियाँ 20.05.2009 को या उससे पूर्व अपने विचारों से महानिदेशक को अवगत करा सकती हैं।

[फा. सं. डी-22011/10/2009]

एस. एस. राणा, महानिदेशक

DIRECTORATE GENERAL OF SAFEGUARDS

NOTIFICATION

New Delhi, the 23rd April, 2009

Sub. : Safeguard investigation concerning imports of Hot Rolled Coils/Sheets/ Strips into India.

G.S.R. 281(E).—Having regard to Customs Tariff Act, 1975, as amended, and the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 thereof;

1. Procedure:

- (i) M/s. Ispat Industries Limited and Essar Steel Limited (hereinafter referred to as applicants) filed petition on 5th Feb., 2009 before the Director General in accordance with the Customs Tariff Act, 1975, as amended and Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 notified vide Notification no. 35/97-NT-Customs dated 29.07.1997 (hereinafter referred to as Rules), alleging increased imports of Hot Rolled Coils/Sheets/Strips in India causing serious injury and threat of serious injury to the Domestic producers. The petition has been supported by JSW Steels Limited and Steel Authority of India Limited.
- (ii) Preliminary scrutiny of the application showed some deficiencies, which were rectified by the applicants. The applicants filed updated and duly documented application on 21st March 2009.

- (iii) After due verification, it was seen that there is sufficient prima facie evidence regarding increased imports, serious injury or threat of serious injury and a causal link between increased imports and alleged injury or threat of serious injury to justify initiation of investigations. Accordingly, it was decided to initiate investigations to determine whether imports of the product under consideration have increased under such circumstances as to cause or threaten to cause serious injury to the domestic industry to justify imposition of safeguard duty.
- (iv) Notice of initiation of safeguard investigation concerning imports of Hot Rolled Coils/Sheets/Strips into India was issued on 9th April 2009 and was published in Extraordinary Gazette of India vide notification no. D-22011/10/2009.
- (v) A copy of initiation notification has been sent to Governments of exporting countries through their embassies in New Delhi
- (vi) A copy of the initiation notification has been sent to all known interested parties as under:

Domestic producers:-

- (a) Ispat Industries Limited, Mumbai
- (b) Essar Steel Limited, Mumbai
- (c) JSW Steel Limited, Mumbai
- (d) Steel Authority of India Limited, New Delhi
- (e) Tata Steel Limited, Mumbai

Importers/consumers

a) Bhushan steel Limited, New Delhi	l) Samir Industrial Metal Corporation, Mumbai
b) National Steel & Agro Industries Ltd, Indore	m) Rane (Madras) Ltd., Chennai
c) Shree Precoated Steel Ltd, Mumbai	n) Ramesh Steel Sales, Mumbai
d) Uttam Steels, Mumbai	o) National Brass Works, Mumbai
e) Yash Pal and Co, New Delhi	p) Gujarat Otofilt, Ahmedabad
f) Vishal Tubes & Pipes Pvt. Ltd, Mumbai	q) Brakes India Limited, Chennai
g) V.D.Swamy and Company Limited, Chennai	r) Bharat Tin and Enamel Co. Private Ltd, Kolkata
h) Unimech Engineers, Satna	s) Abdul Wajid and Co., Mooradabad
i) Toyota Tsusho Corporation, Bangalore	t) Mark Auto Industries Limited, Gurgaon
j) The Premier Automobiles Ltd, Mumbai	u) Kiran Overseas, Mumbai
k) Sanco Chemicals Pvt. Ltd, Mumbai	v) Kehr Surgical & Allied Products P. Ltd., Kanpur

Exporters

Wuhan Iron And Steel (Group) Corporation, China	Anshan Iron And Steel Group Corp. China
Baotou Iron And Steel (Group) Co.Ltd. China	Tangshan Grand Faith Steel Co., Ltd, China
Beijing Shougang Co Ltd, China	Evarzholding Group Co. Ltd, Russia
Severstal, Russia	Industrial Union Of Danbass, Ukraine
Ilych, Ukraine	SCM, Ukraine
Eregli Iron And Steel Co.Turkey	POSCO South Korea
Dongbu Group, South Korea	G Steel PCL Thailand
Sahaviriya Steel Industries PCL Thailand	NSM Steel Thailand
PT Krakatau Steel, Indonesia	Saudi Iron And Steel Company Saudi Arabia
Highveld Steel, South Africa	Mittal Steel South Africa
Ispat Karmet, Kazakhstan	JFE Steel Corporation, Japan
Nippon Steel Corporation, Japan	Esfahan Steel Company Iran
Mobarakeh Steel Company, Iran	Megasteel Wisma Lion, Malaysia
Steelcorp, Phillippines	Mittal Steel Galati, Romania
Bluescope Steel Limited, Australia	Onesteel Limited, Australia

Orrcon Pty Limited, Queensland	Duferco Belgium, Belgium
Cockerill Sambre Sa, Belgium	AltaSteel Ltd. Canada
Associated Tube – Canada	Stelco/Us Steel Canada
Eramet, France	Ugitech Sa, France
Erasteel SAS, France	Badische Stahlwerke Gmbh, Germany
Hüttenwerke Krupp, Germany	Saarstahl AG, Germany
Salzgitter Ag Stahl Und, Germany	Nedstaal B.V., Netherlands
Natsteel Holdings Pte Ltd, Singapore	Ovako Holdings Ab, Sweden
Tang Eng Iron Works Co. Ltd. Taiwan	Yieh United Steel Corporation Taiwan
Corus Group - United Kingdom	Commercial Metals Company - United States
Hoa Phat Steel Pipe Co Ltd VietNam	Euro Gulf Steel Industries LLC, U.A.E.

Known trade associations

Automotive Component Manufacturer Association of India, New Delhi	Cold rolled steel Manufacturer Association of India, New Delhi
Builders Association of India, Mumbai	All India Steel Re-rollers Association, New Delhi

- (vii) Questionnaire has also been sent to all known domestic producers, known exporters & known importers/consumers and they are being advised to submit their response within 30 days.
- (viii) The information being called from the foreign producers, Indian importers/consumers, Indian Producers and other interested parties shall be considered for final determination.

2. Views of domestic industry

The domestic industries viz. Ispat Industries Limited, Essar Steels Limited and supporters M/s. JSW Steels Limited and Steel Authority of India Limited constituting 79% of domestic production of the product made following submissions:

- (i) The product under consideration in the present investigation is Hot Rolled Coil/Sheet/Strips falling under customs subheading no. 7208 of Customs Tariff Act.
- (ii) Imports of the product concerned into India which was 1.67 Lac MT/month in 2005-06 remained at almost same level in 2006-07. In 2007-08 it increased to 2.30 Lac MT/month, but declined to 2.25 Lac MT/month in April08-June08 quarter and to 0.80 Lac MT/month in July08-Sept08 quarter due to increase in import prices. The domestic industry argued that the domestic prices were lower than import prices during this period. With the start of current recession, imports started increasing rapidly at steeply declined prices and increased to 1.479 Lac MT/month in Oct-Dec08 quarter, which increased to 2.306 MT/month in Jan-Feb month.
- (iii) Price of imported material started declining from Oct 08 because of unforeseen decline in global demand due to global unexpected recession. The prices declined steeply from the levels of above US\$ 1000 pmt in Oct., 08 to below US\$ 400/MT at present.
- (iv) Material which was booked in Oct-Nov 2008 have started to landing at Indian port since Jan-Feb 2009. In general, there is two months time lag between imports booking and arrival of shipment in India.
- (v) In Feb 2008 alone, about 1 Lac MT material landed at Mumbai port at a price of 450 USD/MT. And in January 2009, this quantity was 1.50 Lac MT @ 502 USD
- (vi) The sharp price decline in import prices is unprecedented as is evident from the following. It would be seen that the import price increased significantly in 2007-08, partly due to increase in input

costs and partly due to global increase in the import prices. However, with the sudden recession, the import prices plummeted to very low level, as would be seen from the table below. The declining trend in the prices has not stopped even now:-

Year	Price in USD/MT
2005-06	738
2006-07	607
2007-08	781
April-Sept08	1070
Oct-Dec08	1054
Jan 09	858
Feb 09	648
Present offers	380

Even when average import prices in Jan. and Feb. were US\$ 858 and 648 pmt respectively, the most peculiar part is that the volume of imports at lower prices has significantly increased, as would be seen from the table below.

Year	Volume in MT (Avg monthly import below 600 US\$ or below NIP)	% of below US\$ 600 or below NIP in total import	import price in USD
April-Sept08	8,071	5.28%	504.82
Oct-08	2,975	1.85%	518.36
Nov-08	6,192	3.40%	444.12
Dec-08	27,394	27.17%	538.38
Jan-09	97,182	38.78%	468.35
Feb-09	129,963	61.71%	450.24

- (vii) Unforeseen circumstances is in terms of collapse of world economy leading to huge demand supply gap. Resultantly, every producer is finding it very difficult to sell its product and prices are continually falling. Because of price sensitive nature of market, the Indian consumers are increasingly switching to imports.

- (viii) As a result of significant increase in imports, there has been significant fall in domestic production, sales and capacity utilization of product covered during the recent period.
- (ix) The applicants requested for safeguard duty for two years. Further, in view of critical circumstances, applicant has requested for immediate imposition of provisional safeguard duties.

3. Finding of the DG

- (A) The issue of imposition of immediate safeguard measures was examined. It has been found that a total of 168 safeguard initiations were reported to the WTO between 29.03.1995 to 12.11.2008. It has been observed that provisional safeguard measures have invariably been recommended/imposed most expeditiously. In fact, in several cases provisional safeguard measures have been recommended on the same date as the date of initiation of the investigation. The Rule 9 of Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 notified vide Notification no. 35/97-NT-Customs dated 29.07.1997 prescribes that the Director General shall proceed expeditiously with the conduct of the investigation and in critical circumstances, he may record a preliminary finding regarding serious injury or threat of serious injury. The principles governing investigations have been provided under rule 6 of the Safeguard Rules, which is independent to Rule 9. Rule 15 of the Safeguard Rules provides for refund of differential safeguard duty in case of safeguard duty imposed after conclusion of the investigation is lower than the provisional duty already imposed or collected. This implies that if the DG eventually recommends not to impose safeguard duty, the entire interim safeguard duty recommended and collected shall be refunded. The harmonious reading of Rule 6, 9, and 15, of the said Rules leads to a conclusion that the Rules provide for expeditious recommendation of provisional safeguard duty based on preliminary finding and refund of

differential duty in case it is ascertained that the duty imposed after conclusion of the investigation following investigation process and natural justice as enshrined in the Rule 6 is lower than provisional safeguard duty. However, in critical circumstances, any delay in imposition of provisional safeguard duty may cause damage which would be difficult to repair. Accordingly, it was considered prudent to analyze circumstances to assess whether the same falls in the category of critical circumstances calling for immediate imposition of safeguard duty.

- (B) **Product under consideration :-** The product under consideration in the present investigation is Hot Rolled Coils/Sheet/Strips upto 20 MM thickness and 2000 MM width and is classified under sub-heading No. 7208 of Schedule I of the Customs Tariff Act 1975. The product under consideration is produced and sold in a large number of grades and in combination of various thickness and widths.
- (C) **Domestic industry:-** There are currently five producers in India having capacity to produce the product under consideration, namely Ispat Industries Limited, Essar Steel Limited, JSW Steels Limited, Steel Authority of India Limited and TATA Steels Limited. The petition has been filed by Ispat Industries Limited and Essar Steel Limited. M/s. JSW Steels Limited and Steel Authority of India Limited have supported the petition. Share of applicant and supporter varied from 79% to 81% between 2005-06 and April08-Feb09 period.
- (D) **Increased imports in absolute term:-** The applicant provided information on imports as compiled by the DGCI&S for the period upto June, 2008. Information for the subsequent period is based on information compiled by IBIS. Both the information were made available on transaction by transaction basis. Since this information included imports of various types of hot rolled products, the information was segregated into imports of product under consideration and other products and information relating only to the product under

consideration has been considered. Imports of the product under consideration were as given in the following table:

	Imports volume	Imports per month	Indian production	Indian production per month	Imports in relation to production
	Lac MT	Lac MT	Lac MT	Lac MT	%
2005-06	20.040	1.670	153.248	12.771	13.08%
2006-07	19.670	1.639	166.650	13.888	11.80%
2007-08	27.680	2.307	177.810	14.818	15.57%
April-Jun 08	6.770	2.257	38.080	12.693	17.78%
July-Sept 08	2.405	0.802	48.481	16.160	4.96%
Oct-Dec 08	4.436	1.479	32.010	10.670	13.86%
Jan-Feb09	4.612	2.306	27.260	13.630	16.92%

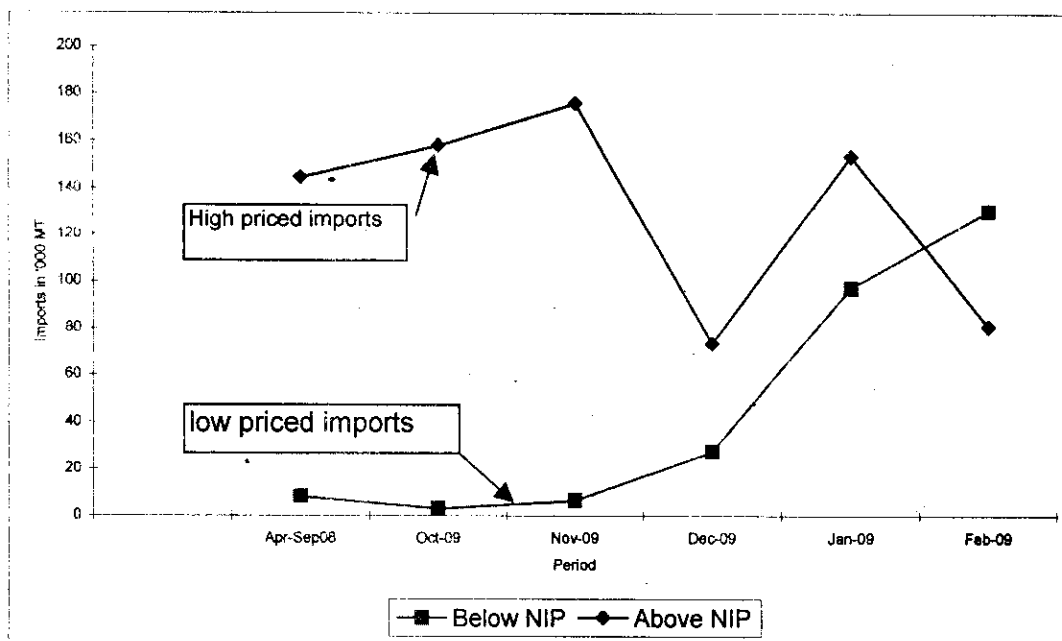
It is thus observed that the imports of the product under consideration have shown sudden, significant, unexpected rapid increase of 55% (imports per month) increased from 1.479 Lac MT in Oct08 – Dec 08 to 2.306 Lac MT in Jan09 – Feb 09. Moreover, it is also seen that despite some increase in production in Jan08 & Feb 08 the Indian industry has lost market share to import. Import share has gone up from about 5% in July – Sep 08, to 13% in oct-Dec 08 to 17% in Jan- Feb 09.

- (E) Applicants argued that there was steep decline in the import prices, which lead to sharp and significant increase in imports. The price at which various imports were reported were analyzed in detail. The imports were categorized into different categories on the basis of import prices over a period of two years. The categories are (a) price below US\$ 600 pmt; (ii) price above US\$ 600 pmt. The US \$ 600 was considered as reasonable bench mark because this is close to Non injurious price (NIP) of US\$ 610 taken at 5% Return on capital Employed (ROCE) of the applicant. This US\$ 600 reasonable benchmark Imports below this price constitute injurious imports, while

Imports occurring above this price can not cause serious injury to the domestic industry at the ROCE taken at 5%.

Period	Per month imports Volume in MT		Ratio of Imports volume		Indian Prices
	Below US\$ 600	Above US\$ 600	Below US\$ 600	Above US\$ 600	
April08-Sept08	8,071	144,836	5.28%	94.72%	40,031
Oct-08	2,975	158,235	1.85%	98.15%	39,160
Nov-08	6,192	175,745	3.40%	96.60%	32,522
Dec-08	27,394	73,420	27.17%	72.83%	28,513
Jan-09	97,182	153,421	38.78%	61.22%	27,467
Feb-09	129,963	80,641	61.71%	38.29%	26,296

It is seen while the surge in total imports is 55% as discussed in para (D) above, the total surge in imports of below NIP is steeply going up from 2975 MT in Oct 08 to 6192 MT in Nov 08 to 24394 MT in Dec 08. Imports further surged to 97182 MT in Jan 09 or 256% as compare to previous month and 129963 MT in Feb 09 (or 330% increase over previous month or 375% over Dec. 08 imports). This surge is causing not only serious injury but also threat of serious injury to the domestic industry.



It is evident from the above that while earlier volume of low priced imports [below NIP or below US\$ 600] were in the region of 1000-8000 MT per month, the volume of lower priced imports has suddenly surged to as high as 97000 MT and 130000 MT in Jan and Feb., 2009 respectively i.e. the share of imports of less than NIP grew from 5.28% April to Sep 2008 to 38.78% in Jan 09 and 62 % in Feb 2009. It is thus concluded that there is significant increase in imports at low prices and significant decline in imports at high prices. The volume of imports surged in view of steeply falling import prices, which has impacted the domestic industry prices leading to significant decline in domestic prices from Rs.40,000 per M.T. in April – Sep. 2008 to Rs. 26,296 in Feb. 2009 and consequent decrease in profits to such an extent that the domestic industry suffered significant financial losses and negative return on capital employed, as discussed in detail in the subsequent paras relating to serious injury. Domestic industry has argued that the imports would continue to surge due to declining landed cost of imports causing further serious injury. It is under these circumstances these imports in bulk quantities at low prices are being made that the same are causing serious injury and threatening further serious injury to the domestic industry and imports capturing significant market share.

- (F) **Increased imports in relation to production & consumption in India** – It was examined whether the imports of the product under consideration increased in relation to production and consumption in India. The table below gives factual position

Year		2005-06	2006-07	2007-08	April-Sept 08	Oct-Feb 09
Imports (Lac MT)	1	20.04	19.67	27.68	9.17	9.05
Domestic production (Lac MT)	2	153.25	166.65	177.81	86.56	59.27
Total quantity Available (Lac MT)	3=1+2	173.29	186.32	205.49	95.74	68.32
Share of import %	4=1/3	11.56%	10.56%	13.47%	9.58%	13.25%
Share of domestic production %	5=2/3	88.44%	89.44%	86.53%	90.42%	86.75%
Sales of domestic industry	6	76.07	90.59	96.39	44.46	31.92
Consumption in India	7=1+6	96.11	110.26	124.07	53.63	40.98
Market share						
Import	8=1/7	20.85%	17.84%	22.31%	17.11%	22.09%
Domestic Industry	9=6/7	79.15%	82.16%	77.69%	82.89%	77.91%

It is thus seen that the share of imports increased both in relation to Indian production and consumption in 2007-08. The same however declined for a while in April-Sept., 2008, when the average import prices increased. The market share of imports has gone up from 17% in April-Sept., 2008 to 22% in Oct., 2008-Feb., 2009. This sharp increase in market share is due to recent sharp fall in the import prices of these products and consequent surge in imports in Jan. & Feb., 2009 period. The average price during April-Sept., 2008 was US\$ 1054 pmt and the same has declined to US\$ 858 in the month of Jan., 09 and US\$ 648 in the month of Feb., 09. However, when data was further broken up for to see the trend at import price less than US \$ 500 and more. It was noted that huge imports were in increased quantity were taking place substituting not only high priced import but also domestic market leading to increased market share of imports. The appellant

have given offers that are being made at USD 380 or even below that thus resulting in a price decline of more than 50%. The domestic industry represented that the most recent offers for supply were below US\$ 400 (as low as US\$ 380) pmt. These abysmally low prices are the main cause of concern to the domestic industry in terms of its impact on plummeting profitability and return on capital employed, thus resulting in serious injury and threat of serious injury.

It is thus seen that imports have increased in both absolute terms as also in relation to production and consumption in India, causing serious injury and threat of serious injury.

- (G) **Unforeseen developments:-** From the information relating to imports, and as stated hereinabove, it is seen that the import price of the product has declined very significantly. Applicants have provided copies "World Steel Dynamics, Steelometer, Steel Benchmark, Inside Track, Global Steel Finance". Applicants claimed that these are well recognized international trade journals/news bulletins in the Country. These journals, inter-alia, applicants submits reveals that (a) global producers of the product are faced with significant decline in demand of the product, (b) the decline in demand of the product is due to sudden and unexpected current global economic situation, (c) steel production is such that the producers cannot regulate the production to the extent they desire, (d) global producers are under tremendous pressure to sell the material, (e) given highly price sensitive market, once low priced supply offers are being made by one producer, others have no option but to reduce their prices. Resultantly, there is continued decline in the prices. The domestic industry argues that the trend of lowering the prices has not stopped even now and producers continue to reduce the prices further. Domestic industry has argued based on these journals that material has been offered at as low as US\$ 380 pmt in most recent period, (g) domestic industry argued that there is a time lag of at least two months between booking of imports and arrival of shipments. However, the domestic producers have to react to the prices lowered

by the foreign producers, even if shipments have arrived Indian ports. Domestic industry argued that in Feb 2009 month itself, about 1 lac MT material landed at Mumbai port at a average price of US\$ 450 pmt.

Thus, it can be seen that with the current economic recession, demand of product under consideration has declined internationally, which has resulted in unprecedented and uneven surplus capacities with global producers of the product under consideration. This has forced the global producers to search for markets even at reduced prices. This has led to sudden and significant drop in the prices of the product. Furthermore, such drop in prices was not one time phenomena. There appears to be a chain reaction. With price reductions offered by one supplier, other suppliers seems to have offer higher price reduction in order to get some demand for their product. Vast Indian highly price sensitive market is becoming a choice for the foreign producers, resulting in huge surge in low priced imports.

This, then constitutes unforeseen developments within the meaning of the Indian safeguard laws and WTO Agreement on Safeguards.

- (i) **Serious injury and threat of serious injury:-** It has been examined whether increased imports of the said goods are causing serious injury to the domestic industry. It was also examined whether the increased imports of the said goods are threatening serious injury to the domestic industry. The imports of the said goods have shown sudden and significant surge in absolute terms and in relation to production and consumption in India. It is noted that imports volume increased significantly, and at rapidly declining import prices. The applicants have claimed that recently offer prices of said product declined sharply to even below US\$ 380. Domestic industry has been forced to lower its prices as customers were seeking import parity prices. Domestic industry has been forced to sell at prices below its cost.

- (a) The Rules provide as under with regard to serious injury to the domestic industry

The Director General shall determine serious injury or threat of serious injury to the domestic industry taking into account, inter alia, the principles laid down in Annex to these rules.

Annexure to the Rules provides as follows.

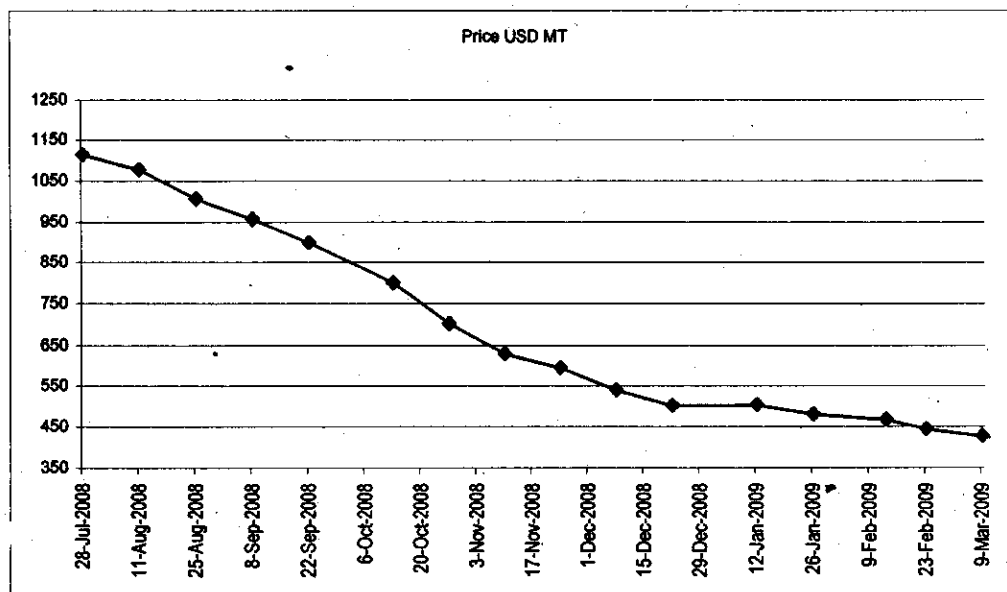
In the investigation to determine whether increased imports have caused or are threatening to cause serious injury to a demonstrate industry, the Director General shall evaluate all relevant factors of an objective and quantifiable nature having a bearing on the situation of that industry, in particular, the rate and amount of the increase in imports of the article concerned in absolute and relative terms, the share of the domestic market taken by increased imports, changes in the level of sales, production, productivity, capacity utilization, profits and losses, and employment.

As held by the WTO, it is not necessary that each and every parameter listed under the Rules should show injury. Even if one or more parameter show significant deterioration in performance, it may be sufficient enough to hold that the domestic industry has suffered serious injury.

As stated hereinabove, the imports of the product under consideration have shown sudden and significant surge. The rate and amount of increase in imports is significant in absolute and relative terms. With regard to impact of the increased imports causing injury to the domestic industry have been analyzed below:

- (b) Price effect – In order to determine whether imports of the product under consideration are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the landed price of imports have been compared with the selling price of the domestic industry. It is noted that there is significant increase in imports where the import price is below US\$ 500 pmt. In fact, about 1 lac MT subject goods have been imported in the month of Feb., 09 alone at an average price of US\$ 450 pmt. The It is seen that the landed price of imports were materially below the selling

price of the domestic industry. The CIF import prices of product concern as reported in Metal Bulletin has been shown below.



The domestic industry argued that the trend of reduction in the import prices started sometime in Oct. 2008 and has not stopped now. The import prices started declining from above US\$ 1000 pmt and have continued to fall even now. Domestic industry provided evidence to show that the import prices/offers have declined to as low as US\$ 380 pmt, landed price of imports is materially lower than the selling price of the domestic industry. It is noted that the imports are materially undercutting the prices of the domestic industry.

As a result of significant price undercutting by the imports, the domestic industry has been forced to reduce its prices. It is noted that the selling price of the domestic industry has very significantly declined, as would be seen from the table given below. It is thus seen that the imports are depressing the prices of the domestic industry in the market.

It was further examined whether the decline in the selling price of the domestic industry was a result of decline in the input costs. It was

noted that even though input costs have declined over this period, the decline in the selling prices of the domestic industry was far more than decline in the cost of production on account of input price reduction, as would be seen from the table below. Resultantly, the contribution margin of the domestic industry very steeply declined.

Prices of major inputs required for steel production

Name	Quarter ending Jun-07	Quarter ending Sep-07	Quarter ending Dec-07	Quarter ending Mar-08	Quarter ending Jun-08	Quarter ending Sep-08	Quarter ending Dec-08	Month Jan-09	Month Feb-09
Iron Ore	5,545	5,887	6,031	6,261	10,504	5,976	4,515	-	5,846
Metcoke	9,746	10,463	11,032	13,316	23,487	30,266	28,226	19,812	-
Coal	5,455	5,143	5,468	5,520	7,110	10,856	15,056	12,237	15,487
Natural Gas	10,328	8,899	10,543	12,379	15,225	17,499	35,690	20,950	25,625
Scrap	30,185	25,624	25,934	21,140	26,732	32,017	23,482	16,061	16,968

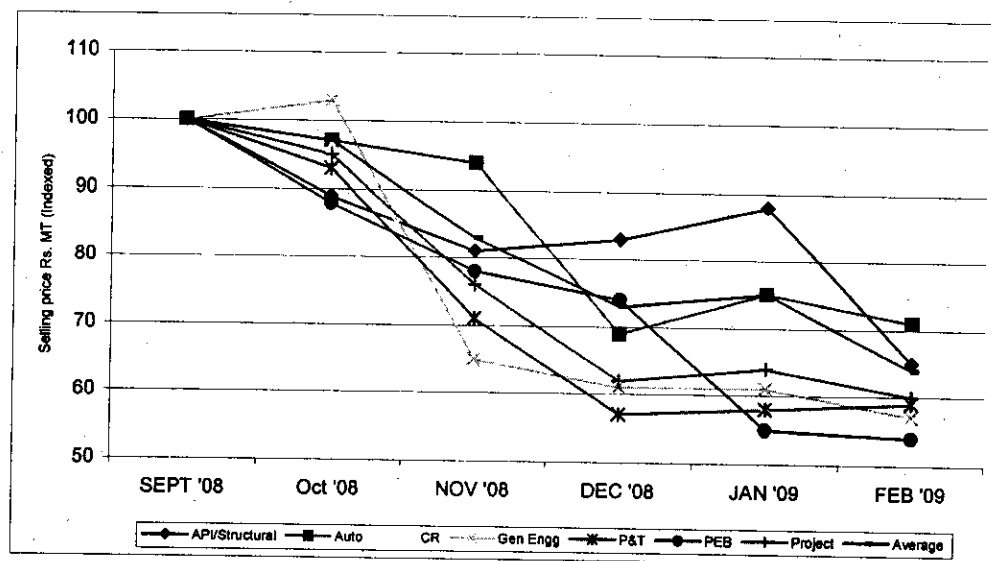
Source : India's imports as reported by DGCI&S for the period upto Sept., 2008 and IBIS thereafter

The above has been shown on indexed basis by considering prices in the first quarter as 100.

Applications	Quarter ending Jun-07	Quarter ending Sep-07	Quarter ending Dec-07	Quarter ending Mar-08	Quarter ending Jun-08	Quarter ending Sep-08	OctDec08	Jan09	Feb09
Iron Ore	100	106	109	113	189	108	81	81	105
Metcoke	100	107	113	137	241	311	290	203	NA
Coal	100	94	100	101	130	199	276	224	284
Natural Gas	100	86	102	120	147	169	346	203	248
Scrap	100	85	86	70	89	106	78	53	56

Prices of the domestic industry in different application segments moved as follows

Grade	SEPT '08	Oct '08	NOV '08	DEC '08	JAN '09	FEB '09
API/Structural	100	89	81	83	88	65
Auto	100	97	94	69	75	71
CR	100	96	72	59	58	58
Gen Engg	100	103	65	61	61	57
P&T	100	93	71	57	58	59
PEB	100	88	78	74	55	54
Project	100	95	76	62	64	60
	100	97	83	73	75	64



It is seen that the increased imports of low priced imports have forced the domestic industry to reduce the prices. Such price reductions were steeper than reduction in the cost of production. The imports have thus had adverse price effect on domestic prices and has depressed the profits and ROCE to such an extent that the domestic industry suffered significant financial losses and negative ROCE .

- (c) **Production:** Production of said product by the applicants increased from 47.20 Lac MT in 2005-06 to 56.32 Lac MT in 2006-07 and further to 61.13 Lac in 2007-08 and 32.94 Lac MT in April-Sept., 2008. The production has however drastically fallen to 8.34 Lac MT in Oct.-Dec., 2008. Even though the production marginally improved to 7.40 Lac MT in Jan.-Feb., 2009, yet the same is significantly lower than previous levels.

Year	Production in LAC MT	
	For the period	Monthly
2005-06	47.20	3.93
2006-07	56.32	4.69
2007-08	61.13	5.09
April-Sept 08	32.94	5.49
Oct-Dec 08	8.34	2.78
Jan-Feb09	7.40	3.70

- (d) **Capacity utilization:** Capacity Utilization of the applicants increased from 83% in 2005-06 to 85% in 2006-07 and further to 93% in 2007-08 and 96% in April-Sept., 2008. The Capacity Utilization has, however, drastically fallen to 49% in Oct.-Dec., 2008. Even though the Capacity Utilization marginally improved to 65% in Jan.-Feb., 2009, yet the same is significantly lower than previous levels.

Year	Capacity Utilization
2005-06	83 %
2006-07	85 %
2007-08	93 %
April-Sept 08	96 %
Oct-Dec 08	49 %
Jan-Feb09	65 %

It is noted that even though capacity utilization increased in Jan.-Feb., 09, the same is still abysmally low. Moreover, this has to be viewed in the context that even though production went up marginally in Jan09 - Feb09, yet imports' market share increased from 17% to 22% during this period. This is reflective of serious injury and threat of serious injury to the industry, as on the one hand landed costs are lower than the domestic industry prices in recent past, while on the other hand, domestic prices have fallen much more sharply than raw material cost thus leading to losses causing surge in imports & causing threat of serious and critical injury to the domestic industry.

- (e) **Domestic Sales –** Domestic Sales of said product by the applicants increased from 20.94 Lac MT in 2005-06 to 28.85 Lac MT in 2006-07 and further to 31.71 Lac in 2007-08 and 16.77 Lac MT in April-Sept.,

2008. The sales has however drastically declined to 5.09 Lac MT in Oct.-Dec., 2008. Even though the sales marginally improved to 4.19 Lac MT in Jan.-Feb., 2009, yet the same is significantly lower than previous levels.

Year	Sales in LAC MT	
	For the period	Monthly
2005-06	20.94	1.79
2006-07	28.85	2.40
2007-08	31.71	2.64
April-Sept 08	16.77	2.80
Oct-Dec 08	5.09	1.70
Jan-Feb09	4.19	2.10

- (f) **Market share:** Market share of applicants has fallen significantly. Applicants had a market share of 21.79% during 2005-06 and 26.17% in 2006-07. Market share further increased to 25.56% in 2007-08 and 31.27% in April-Sept 2008. Market share, however, declined steeply to 24.50% in Oct-Dec 08 and further to 20.79% in Jan09-Feb09. Share of all domestic producers taken together has also fallen in Jan.-Feb., 2009 period.

Year	Market Share of Applicants in Demand
2005-06	21.79 %
2006-07	26.17 %
2007-08	25.56 %
April-Sept 08	31.27 %
Oct-Dec 08	24.50 %
Jan-Feb09	20.79 %

- (g) **Profit/loss :** Profitability of the applicants has fallen significantly. Whereas the domestic industry was profitable till Sept 2008, it has started suffering financial losses after Sept 2008. The losses increased significantly thereafter. Applicants earned profit of 222.57 Crs in 2006-07, 93.99 Crs in 2007-08 and 370.78 Crs in April-Sept., 2008.

Applicants however suffered financial losses of 234.51 Crs in Oct-Dec 2008 and 369.31 Crs in Jan09-Feb09.

Period	Profit/Loss Rs. Crs	Return on capital employed %
2005-06	(544)	(0.08)
2006-07	222	9.58
2007-08	94	8.87
April 08 – Sept 08	371	24.81
Oct 08 – Dec 08	(235)	(3.53)
Jan 09 – Feb 09	(369)	(8.91)

Note Figures in bracket implies negative

Applicants claimed that even though the prices of the inputs required for production of subject goods declined, the decline in the product prices were significantly more than the decline in input costs. The contribution per unit of sales (i.e., the difference between the selling price and costs on account of raw materials alone) declined significantly as is evident from the following.

Period	Contribution margin	
	Rs. Per MT	Indexed
2005-06	6374	100
2006-07	9391	147
2007-08	8979	141
April 08 – Sept 08	12911	203
Oct 08 – Dec 08	6967	109
Jan 09 – Feb 09	3933	62

As a consequence of decline in profits, return on capital employed declined significantly. Applicants earned 10% return on investments 2006-07, 9% in 2007-08 and 24.81% in April-Sept., 2008. Return on investment becomes negative to (4)% in Oct-Dec 2008 and (9)% Jan09-Feb09.

- (h) Employment: It is noted that the employment level does not show injury. The domestic industry had recruited addition personnel after the period of April-Sept 08 in view of the buoyant economy and in the

current crisis, this incremental employment is only adding up to the cost. Applicants have claimed that due to stringent rules & regulations of company, permanent employment in the companies could not be reduced in a short time frame.

- (i) **Productivity:** Productivity per employee of the domestic industry moved in tandem with production. Productivity increased upto Sept 2008 but declined thereafter in Oct-Dec 2008 and Jan-Feb 2009. Applicants claimed that the decline in productivity was due to increased imports. Applicants further claimed that even if the level of productivity was kept at the same level as was in April-Sept., 2008, they would have suffered financial losses.
- (j) **Inventory:** Inventory of the applicants was 0.89 Lac MT in 2005-06, declined to 0.82 Lac MT in 2006-07. It remained more or less same level in 2007-08 at 0.85 Lac MT. In April08-Sept08 inventory increased to 1.72 Lac MT, which declined to 0.63 Lac MT in Oct 2008-Dec2008 and 0.46 Lac MT in Jan-Feb 2009. Domestic industry claimed that decline in inventory is because they regulated the inventory.. Domestic industry has been forced to regulate its production because of low sales volumes, otherwise, inventory levels would have been much higher.

Period	Inventory in Lac MT
2005-06	0.89
2006-07	0.82
2007-08	0.85
April 08 – Sept 08	1.72
Oct 08 – Dec 08	0.63
Jan 09 – Feb 09	0.46

(J) Causal Link between increased imports and serious injury or threat of serious injury:-

As can be seen from the above, it is seen that the foreign suppliers are continually reducing their prices for exports to India. The domestic industry complained that the trend of decline in the import prices started in Sept.-Oct., 08 has not stopped till date. Resultantly, the domestic industry was forced to reduce the prices continuously from Rs. 40000 in April-Sept 2008 to 26000 in Feb 2009 (please see table at (E) above. The price undercutting being caused by the imports therefore resulted in decline in domestic industry prices far beyond the cost of production. Resultantly, the financial losses of the domestic industry increased significantly. In spite of reduction in the prices by the domestic industry, volume of imports surged, thus leading to decline in the sales volumes and market share of the domestic industry. Even in face of declining domestic prices at the rate more than fall in raw material prices, the domestic industry could not match the low landed cost and lost market share recently causing serious injury. Since trend of reduction in import prices is continuing, this is also case of threat of serious injury. . It is thus noted that the injury suffered by the domestic industry was due to increased imports at abysmally low prices.

(K) Other factors

The applicants have filed anti dumping application before the Designated Authority on Anti Dumping. The investigations have been initiated vide notification no. 14/23/2008 dated 28th Nov 2008 with April, 2007 – Sept., 2008 as the investigation period. Thus, the investigation period being considered by the Designated Authority and the period being considered in the present investigation are different. It is noted that no other factor appears to have caused injury to the domestic industry.

- (L) **Developing nations: Share of imports in India.** There have been imports from developing nations from China PR and Thailand, which are more than 3% as shown below:

Source	Qty MT	Share
Above 3%		
China PR	331,508	36.62%
THAILAND	42,401	4.68%

Exports of the products from all other developing countries taken together do not contribute more than 9% of exports to India. Accordingly imports of the product under consideration from all developing nations as notified vide Notification no. 103/98 dated 14.12.1998 (as amended) except China PR, and Thailand may not attract safeguard duty.

- (M) **Adjustment plan:** The domestic producers have proposed measures for reduction in cost of manufacture by reduction in interest cost, increase spending in infrastructure and stability in availability of domestic raw material in terms of pricing.
- (N) **Critical circumstances:-** The critical circumstances have been explained in detail in preceding paras. Further, till Sept 2008, applicants were earning profits, while they have suffered unprecedented level of financial losses in the current period (in Jan-Feb 2009 months alone, applicants suffered financial loss of about 369 crores) There is further decline in import prices, which would further increase imports and cause irreparable losses of the domestic producers.
- (O) In view of the above, critical circumstances exists justifying imposition of provisional safeguard measures immediately in order to save the domestic producer from damage, which would be difficult to repair if the application of safeguard measure is delayed.

(P) Conclusion and recommendation:-

(i) On the basis of above preliminary findings, it is seen that increased imports of the said product have caused serious injury to the domestic industry. Further, increased imports are threatening to cause further serious irreparable injury to the domestic industry. There exist Critical circumstances, where any delay in application for safeguard measures would cause damage which it would be difficult to repair, necessitating immediate application of provisional safeguard measures for a period of 200 days, pending final determination of serious injury and threat of serious injury. Considering the average cost of production of the domestic producers (confidential), a reasonable return on capital employed ROCE taken @ 5% for the applicants, the present level of import duties including anti dumping duties and the average import price of the product under consideration, the end user interests, a provisional safeguard duty of 25% for import of said products up to and including the CIF value of US\$ 600 per MT considered to be the minimum required provisional safeguard duty to protect the interest of domestic industry and is recommended to be imposed on imports of Hot Rolled Coils/Sheet/Strips upto 20 MM thickness and 2000 MM width classified under sub-heading no. 7208 of Scheduled I of the Customs Tariff Act, 1975.

(ii) However, for the import for which anti dumping duty is or would be applicable, safeguard duty for such import will be the difference of the provisional Safeguard duty proposed in para P (i) above and the applicable anti dumping duty. Further, for the import for which applicable anti dumping duty would be more than the provisional safeguard duty, no safeguard duty shall be levied on such import. However, for other imports Safeguard Duty would be as proposed in para P (i) above.

(Q) Further process:

(i) The information provided by various parties may be subject to verification wherever necessary for which they will be informed separately.

- (b) A public hearing will be held in due course before making final determination, for which date will be informed separately.
- (c) Interested parties may make their views known to the DG on this preliminary finding on or before 20.05.2009.

[F. No. D-22011/10/2009]

S. S. RANA, Director General